जुलाई-अगस्त, 2019

बच्चों की रुचिकर एवं ज्ञानवर्द्धक सामग्री से परिपूर्ण पत्रिका

बच्चों की प्रिय पत्रिका

बाल वाणी

मूल्य ₹15/-

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

स्मरण

गाँधी सागर बाँध

श्री कृष्ण चन्द्र तिवारी 'राष्ट्रबन्धु'

गाँधी सागर बाँध,
मित्रता का शुभ काम है।
गाँधी सागर बाँध,
परिश्रम का परिणाम है।।
गाँधी सागर बाँध,
हरेगा हीनता।
गाँधी सागर बाँध,
हरेगा दीनता।।
एक नया बरदान।
जय जय राजस्थान।।
जय जय सारा देश।
जय जय मध्य प्रदेश।।

शहरों तक बारात चली,
खुशहाली की।
गाँवों में दीवाली है,
हरियाली की।।
गाँधी सागर बाँध,
बिहंसती चम्बल है।
गाँधी सागर बाँध,
हमारा सम्बल है।।
हटता रेगिस्तान।
जय जय राजस्थान।।
सुख कर रहा प्रवेश।
जय जय मध्य प्रदेश।।

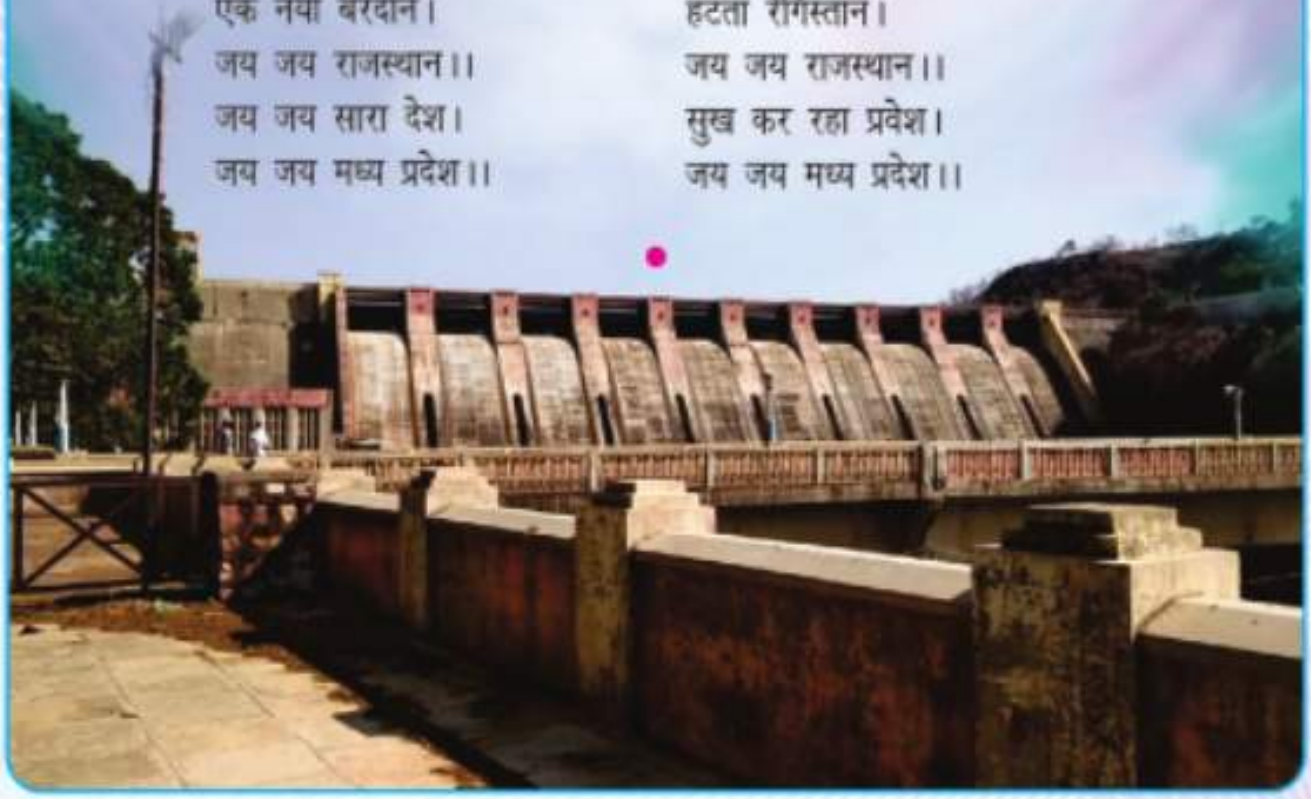

बच्चों की प्रिय पत्रिका

बालवाणी

द्वैमासिक

जुलाई–अगस्त, 2019 | वर्ष–20, अंक–4

कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।।

मुख्य सम्पादक
डॉ. सदानन्दप्रसाद गुप्त

प्रबन्ध सम्पादक
शिशिर

सम्पादक
डॉ. अमिता दुबे

सहायक सम्पादक
श्याम कृष्ण सक्सेना

कलासज्जा
विभाष पाण्डेय

बालवाणी
सदस्यता शुल्क
प्रति अंक 15.00
वार्षिक 80.00
आजीवन 1000.00

प्रकाशक : उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन
6, महात्मा गांधी मार्ग, हज़रतगंज, लखनऊ–226001 दूरभाष : 0522-2614470-71
ई–मेल : directoruphindi@yahoo.in, **वेबसाइट** : www.uphindisansthan.in
मुद्रक : रोहिताश्व प्रिण्टर्स, 268, ऐशबाग रोड, लखनऊ

बालवाणी सदस्यता शुल्क : प्रति अंक : 15.00, वार्षिक : 80.00, आजीवन : 1000.00

भरत की कथा

अमृतलाल नागर

भरत विद्या और पराक्रम में अपने पिता से भी बढ़-चढ़कर निकले। उन्होंने उस सारी भूमि को अपने पराक्रम से जीत लिया, जिसे अब हम भारतवर्ष कहते हैं। उन्होंने बाह्लीक, ऐलम अथवा ऐलवर्त्त से लेकर यौन द्वीप तक सबको हराया। उनके राज्य का सारा इलाका उस समय भरतखंड कहलाता था।

इन्हीं राजा भरत ने समाज में ऋषिकर्मी ब्राह्मणों को पहली बार एक वर्ग के रूप में प्रतिष्ठा दी। उन्होंने ऋषियों की संगति में बैठ-बैठ कर ऊँचा ज्ञान-लाभ किया। अब वे सोचने लगे कि मैं भरतखंड का सम्राट हूँ। मुझ में बड़ी शक्ति है, पर मैं अपनी मृत्यु तक को नहीं टाल सकता। मेरे बिना चाहे भी मौत किसी दिन आकर मुझे धर दबोचेगी और बेबस होकर मैं निष्क्रिय काया मात्र रह जाऊँगा। इन विचारों से राजा भरत के मन में वैराग्यभाव उत्पन्न हो गया। वे तपस्या करने लगे। तपस्या करते-करते वे इतने बड़े सिद्ध हुए कि उनके लिए सर्दी, गर्मी, बरसात, सुख-दुख आदि सभी भाव एक समान हो गये। वे अपनी काया से बिल्कुल अलिप्त होकर भगवान में लीन रहते थे। उन्हें न कपड़ों की आवश्यकता थी और न भूख प्यास ही अधिक लगती थी। वे इतने सीधे थे कि लोग उन्हें जड़भरत तक कह देते थे।

एक बार प्रतापी राजा नहुष ने उन्हें कोई मामूली जंगली समझकर अपने कहार के बीमार पड़ने पर अपनी डोली उठाने की आज्ञा दे दी। बिना किसी प्रकार की चिन्ता के भरत सरल भाव से डोली के कहार बन गये। बाद में राजा नहुष को जब यह मालूम हुआ कि यह तो प्रतापी चक्रवर्ती महाराज मनु भरत हैं और अपनी तपस्या के कारण जड़भरत कहलाते हैं, तब उन्हें बड़ा पश्चाताप हुआ। उन्होंने भरत से क्षमा माँगी। यह पृथ्वी जब तक रहेगी और उसमें भारतवर्ष रहेगा, तब तक महाराज भरतजी की कीर्ति सदा अमर रहेगी।

बच्चों की प्रिय पत्रिका

बालवाणी

द्वैमासिक

सम्पादकीय

प्रिय बच्चो,

आपने गर्मी की छुट्टियों का खूब आनन्द लिया होगा। अब आपके विद्यालय भी खुल गये होंगे और आप पुनः तन्मयता से अध्ययन में लग गये होंगे। आप मनोयोग पूर्वक अध्ययन करें तथा सफल हों यही मेरी शुभकामना है।

गर्मी छुट्टियों के बीच भारत में आम चुनाव सम्पन्न हुए। आपने भी इसे देखा और अनुभव किया होगा। आप भी आगे चलकर इसमें भाग लेने के लिए अर्ह होंगे। आम चुनाव लोकतंत्र का महापर्व है। भारतवर्ष दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। छिटपुट घटनाओं को छोड़ दें तो चुनाव शान्तिपूर्वक सम्पन्न हुए और जनता ने स्थिर सरकार के पक्ष में मतदान किया। यह भारतीय लोकतंत्र के लिए शुभ लक्षण है।

इसी गर्मी में ईद का त्योहार भी मनाया गया। यह परस्पर प्रेम और सौहार्द की वृद्धि का त्योहार है। पवित्र रमजान के उपवास के बाद ईद के उल्लास का अपना आनन्द है।

आप सब जानते हैं कि भारत की सभ्यता और संस्कृति का विकास नदियों के किनारे हुआ है। नदी हमारे जीवन की प्राणधारा है। यह माना जाता है कि ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को गंगा नदी का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। इसीलिए ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को गंगा दशहरा के रूप में भी जानते हैं। इस संदर्भ में कई कथाएँ प्रचलित हैं। गंगा नदी का भारतीय संस्कृति में विशेष महत्व है, उसे देव नदी कहा गया है। गंगा नदी भारत के बहुत बड़े भूभाग को अपने जल से अभिसिंचित करती है। कृषि व्यवस्था गंगा नदी पर काफी सीमा तक निर्भर है। सरकार गंगा नदी के अविरल निर्मल जल प्रवाह के लिए कृत संकल्प है। पर सरकार का कोई भी संकल्प बिना जन सहयोग के पूरा नहीं हो सकता। हम सबको सरकार के कार्यक्रम का सक्रिय समर्थन करना चाहिए। जल प्रदूषण एक गंभीर समस्या बन गया है। हमें समझना होगा कि जल ही जीवन है।

21 जून का दिन भारत के लिए अत्यंत महत्व रखता है। आज के दिन को संयुक्त राष्ट्रसंघ ने भारत के प्रस्ताव पर विश्व योग दिवस के रूप में मनाने की स्वीकृति प्रदान की। यह भारत सरकार की बहुत बड़ी उपलब्धि है। योग भारत की प्राचीन परम्परा का हिस्सा है। योग शरीर और मन के स्वस्थ विकास में सहायक है। यह पूर्ण विज्ञान है शरीर का ही नहीं मन प्राण और आत्मा का भी। आसन, प्राणायाम इसके महत्वपूर्ण पक्ष हैं। आप भी योग से जुड़कर अपना सम्पूर्ण विकास कर सकते हैं।

बच्चों की प्रिय पत्रिका

बालवाणी

द्वैमासिक

जून भारतीय संत काव्य परम्परा के प्रमुख कवि कबीरदास की जयंती का महीना भी है। कबीरदास भक्ति आन्दोलन की उपज हैं। उन्होंने समाज में व्याप्त पाखण्ड और भेदभाव की रीति पर जबर्दस्त प्रहार किया तथा सहज जीवन व्यतीत करने पर बल दिया। आपने कबीरदास के विषय में अवश्य ही सुना होगा, उनकी रचनाएँ भी पढ़ी होंगी। आरंभिक कक्षाओं से ही कबीर की साखियाँ और पद पाठ्यक्रम का हिस्सा होते हैं। कबीर सहजता, मानवीय संवेदना, मानवीय प्रेम के संदेश का प्रसार करने वाले बहुत बड़े कवि हैं। आज भी कबीर के संदेश की प्रासंगिकता बनी हुई है। कबीरदास के संदेश को जीवन में चरितार्थ करना मानवता की भलाई के लिए आवश्यक है।

गत अंकों की भाँति इस अंक में भी आपके लिए बहुत उपयोगी सामग्री दी गयी है। इस अंक में प्रेरक पौराणिक प्रसंग, पंचतंत्र के लोकहितकारी प्रसंग, प्रेरक कहानियाँ, कविताएँ तथा पर्यावरण से सम्बन्धित सामग्री दी गयी है। अमृत लाल नागर हिन्दी कथा जगत् की महत्वपूर्ण उपलब्धि हैं। उन्होंने राजा भरत की प्रेरक कथा आपके समक्ष रखी है। मनुष्य सरलता से सहजता से महान् बनता है यह कथा हमें इसका संदेश देती है। पंचतंत्र की खरगोश और सिंह की कथा हमें यह बताती है कि शरीर बल से बुद्धि बल महत्वपूर्ण होता है। 'चमत्कारी कलम' कहानी अध्यवसाय और निष्ठा का संदेश देती है। 'ग्लोबल वार्मिंग' लेख पर्यावरण के बढ़ते संकट पर प्रकाश डालता है। 'नेकी के पथ पर' कहानी यह संदेश देती है कि ईमानदारी तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का परिणाम अंततः अच्छा ही होता है।

जनसंख्या वृद्धि आज विश्व के समक्ष बड़ी चुनौती है विशेषकर भारत के लिए जनसंख्या वृद्धि एक गंभीर संकट का कारण हो सकता है। भारत की जनसंख्या 130 करोड़ से भी अधिक हो गयी है। इतनी बड़ी जनसंख्या के लिए मूलभूत सुविधाएँ जुटाना बड़ी चुनौती है। 'विश्व जनसंख्या दिवस' आलेख में इसकी चर्चा की गयी है। 'मुझसे भी बढ़कर' कहानी में घड़े के प्रतीक के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि अहंकार मनुष्य के पतन का कारण बनता है। 'कच्चे धागे का बन्धन' लेख में रक्षाबंधन पर्व के पीछे के भाव का सजीव वर्णन है। इस प्रकार उपर्युक्त सामग्री से युक्त यह अंक आपको पसंद आयेगा। यदि आप पत्रिका के विषय में अपने सुझाव देना चाहते हैं तो अवश्य ही दें। हम चाहते हैं कि 'बालवाणी' और भी आकर्षक, शिक्षाप्रद तथा मनोरंजन प्रधान बने। हमें आपके बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

आपका

सदानन्दप्रसाद गुप्त

बच्चों की प्रिय पत्रिका

बालवाणी

द्वैमासिक

जुलाई–अगस्त, 2019 | वर्ष-20, अंक-4

अनुक्रम

स्मरण

गांधी सागर बांध	श्री कृष्ण चन्द्र तिवारी 'राष्ट्रबन्धु'	आवरण 2
भरत की कथा	अमृत लाल नागर	2

धरोहर

खरगोश व सिंह, जूँ और खटमल की कथा	आचार्य विष्णु शर्मा	7

कहानी

आओं खेलें	हरिन्दर सिंह गोगना	13
बोहनी	डॉ0 गोपाल कृष्ण शर्मा 'मृदुल'	16
चमत्कारी कलम	अनुराधा गौतम	19
बिस्कुट लाल	दरदर्शन सहगल	24
नेकी के पथ पर	शारदा लाल	35
मुझसे भी बढ़कर	संदीप सक्सेना	48

पौराणिक कथा

गणेश जी और उनका वाहन	सुधा शुक्ला	56

नाटक

साक्षात्कार	डॉ0 दयाराम मौर्य रत्न	53

कविता

बरखा आई	विष्णु सक्सेना	15
नया रोबोट	डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी	18
रक्षाबन्धन	डॉ0 अराधना अस्थाना	22
चंद्रगहण	संकोच कुमार सिंह	26
बुगली रानी	नेहा वैद	37
बारिश बारिश खेलें	डॉ0 रामकठिन सिंह	38
लहर लहर लहराता झंडा	रमाकान्त मिश्र 'स्वतंत्र'	39
आजादी है सबको प्यारी	डॉ0 मधु प्रधान	40
मां आखिर मां होती है	नयन कुमार राठी	41

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

बच्चों की प्रिय पत्रिका

बालवाणी

द्वैमासिक

जुलाई–अगस्त, 2019 वर्ष-20, अंक-4

अनुक्रम

ज्ञान विज्ञान		
ग्लोबल वार्मिंग का गहराता संकट	जसविन्दर शर्मा	27
ज्ञानवर्द्धक लेख		
अनवरत यात्रा	शशि गोयल	29
कागज का निर्माण	अलका प्रमोद	42
विश्व जनसंख्या दिवस	सुधा तैलंग	45
कच्चे धागे का बंधन	प्रो0 योगेश चन्द्र शर्मा	50
कठपुतली की कहानी	मोहन लाल मगो	59
चित्रकथा		
राजिम की कहानी	परमात्मा प्रसाद श्रीवास्तव	31
विविध		
वर्ग पहेली	सुबोध कुमार दुबे	23
रास्ता बताओ	चांद मोहम्मद घोसी	52
अन्तर ढूढ़ो	-	62
बच्चों की कलम से		
काला बादल आया रे, भारत देश महान	अजय राजपूत	64
छपक छपक छैय्या	श्रृष्टि पाण्डेय	63
घमण्डी हाथी	अखिलेश कुमार	61
बच्चों की तूलिका		
चित्र-1	राजवीर विश्वकर्मा	आवरण-3
चित्र-2	आरुषी गुप्ता	आवरण-3
चित्र-3	नितिन वर्मा	आवरण-3
चित्र-4	अनन्या सक्सेना	आवरण-3

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

खरगोश व सिंह

आचार्य विष्णु शर्मा

गतांक से आगे : दमनक ने कौवे व काले सांप तथा बगुले और केकड़े की कथा को सुनाकर कहा कि जो काम अक्ल से हो सकता है, वह बल से नहीं। अब आगे.... सम्पादक

किसी घनघोर जंगल में भासुरक नाम का सिंह रहता था। वह अत्यन्त ही बलशाली था। बल के कारण वह पशुओं पर अत्याचार करने लगा। विशेषतः हरिण व खरगोशों पर। करें तो क्या करें। इसलिए जंगल के सारे पशु एकत्रित होकर सिंह के पास गये। प्रार्थना की।

उन्होंने कहा, 'स्वामी! आप व्यर्थ ही अनेक पशुओं को मारते हैं। आपका भोजन तो एक पशु से ही पूरा हो सकता है। अतः हर रोज एक पशु आपके पास बारी-बारी से आ जायेगा। आपका पेट भर जायेगा और हमारा सर्वनाश नहीं होगा। नीति में कहा है कि जो राजा अपनी शक्ति के अनुसार आहिस्ता-आहिस्ता राज्य के वैभव का भोग करता है, वह चिर रहता है। प्रजा की रक्षा करना प्रशंसनीय है और प्रजा का उत्पीड़न निन्दनीय। . . .राजा को हर सुख प्रजा से मिलता है। प्रजा को दोहने वाला राजा स्वयं अपना दोहन करता है। कहने का तात्पर्य है - राजा का समस्त वैभव प्रजा द्वारा प्रदत्त है।'

पशुओं की बातें राजा शेर के समझ में आ गयीं। उसने अपनी स्वीकृति देते हुए कहा, 'यदि किसी ने वचन भंग किया तो मैं सबको मार डालूँगा।'

सब पशुओं ने प्रतिज्ञा की। वे अब निडर थे और वन का आनंद ले रहे थे। हर दिन एक जानवर सिंह के पास जाता था। इस नियम में सभी आयु के पशु, हर जाति के जानवर शामिल थे।

जब खरगोश की बारी आयी तो वह डर गया पर सब पशुओं के समझाने के बाद वह चल दिया। आहिस्ता-आहिस्ता। वह सिंह को मारने की तरकीब सोचने लगा। बुद्धिमान था। कहते हैं - जो रास्ता ढूंढ़ते हैं, उन्हें ईश्वर राह दिखाता है।

चलते-चलते वह एक कुएं के पास पहुँचा। उसमें उसने अपनी परछाईं देखी। उसे देखकर वह सोचने लगा। फिर वह मारे खुशी के उछल पड़ा। तय किया - यह तरकीब ठीक रहेगी।

वह देर से पहुँचा। शेर भूख से व्याकुल था। वह क्रोध में सोच रहा था कि कल वन के सारे पशुओं को मार डालूंगा।

उसी समय खरगोश ने सिर झुकाकर प्रणाम किया।

'ओ लघु पशु, तू देर से क्यों आया?' सिंह ने गुर्राकर कहा, 'आज मैं तुझे खाऊंगा और कल तेरे देर से आने की गुस्ताखी में इस जंगल को पशुहीन कर दूँगा।'

खरगोश ने विनम्रतापूर्वक कहा, 'राजराजेश्वर! इसमें मेरा कोई अपराध नहीं है और न दूसरे पशुओं का।'

'तुम क्या कहना चाहते हो?'

'स्वामी! मैं छोटा हूँ इसलिए हम पांच थे। हम आ रहे थे। पर एक दूसरे शेर ने मांद से निकलकर रोक लिया। पूछा, 'कहाँ जा रहे हो?'

'हम सब अपने स्वामी सिंहों के सिंह भासुरक के पास जा रहे हैं।'

वह अट्टहास कर उठा। बोला, 'मूर्खों! यह सारा जंगल तो मेरा है। भासुरक तो चोर-उचक्का है। कायर-कीट है। यहाँ चार खरगोश रहेंगे। एक खरगोश जाकर उस निठल्ले को बुलाकर लाये। जो शक्तिशाली होगा, वही यहां का राजा होगा, उसे ही जानवर खाने को मिलेंगे।' ...बस, मैं दुखी मन आपके पास आया हूँ। यही देरी का कारण है।'

भासुरक भी अपना सारा धैर्य खो बैठा। कड़ककर बोला, 'उस दुष्ट की यह मजाल। चल . . .मैं उसे अभी यमलोक पहुँचाता हूँ।'

'आप ठीक फरमाते हैं पर वह दुर्ग में रहने वाला है। दुर्ग में रहने वाला मजबूत होता है। उसने दुर्ग से निकलकर ही मुझे फटकारा है। आपको बताऊं जहां हजारों हाथी, घोड़े लड़ाई नहीं लड़ सकते, वहाँ एक राजा किले के द्वारा विजय-फल पा लेता है।' किले की चहारदीवारी पर खड़ा एक तीर चलाने वाला कई लोगों को मार सकता है। जिस राजा के पास किला है, वह विजयी होता है। इसलिए हर नगर में एक किला है।'

'वह किले में है तो क्या हुआ? मुझे अपनी बाजुओं की शक्ति पर भरोसा है। तू किला तो दिखा।'

'खरगोश! शायद तुम नहीं जानते कि शत्रु और रोग का तुरन्त उपचार न करें तो वे मृत्यु का कारण बन जाते हैं। स्वयं का हित चाहने वाला शत्रु को सक्षम नहीं बनने देता। . . .जो बलशाली है, वह अकेला ही परशुराम की तरह शत्रुओं का नाश कर देता है।'

'मगर शत्रु के बल को जाने बिना लड़ना भी तो नीति विरुद्ध है।'

'तू इसकी चिंता क्यों कर रहा है। चल, तू मुझे उस क्षुद्र शत्रु को दिखा।'

'फिर पधारिए।'

खरगोश आगे-आगे और सिंह पीछे-पीछे। . . .कुएं के समीप पहुँचकर खरगोश ने कहा, 'आप महान बलशाली और तेजस्वी हैं। आपको दूर से देखकर वह कायर चोर की तरह किले में घुस गया।'

'कहाँ है उसका किला?' सिंह गुर्राया।

खरगोश ने डरते-डरते कुआं दिखला दिया।

भासुरक ने कुएं में अपनी परछाईं देखी। जोर से गरजा। उसकी प्रतिध्वनि दुगनी हुई। क्रोध में अंधा होकर भासुरक कुएं में कूद गया। थोड़ी देर में उसके प्राण पखेरू उड़ गये।

दमनक ने जोर देकर कहा, 'मैं इसीलिए ही तो कहता हूँ कि जिसमें बुद्धि है, उसी में बल है। तू यदि कहे तो मैं उन दोनों के बीच वैमनस्य पैदा कर दूँ?'

'यदि यह संभव है तो भगवान तुम्हारी मदद करें।'

उसे मौका मिल गया। पिंगलक अकेला था। दमनक उसके सामने प्रणाम करके बैठ गया।

पिंगलक ने पूछा, 'बहुत दिनों के बाद दिखायी दिये। क्या बात है? कुशल तो हो।'

'आपकी कृपा है महाराज पर अब संजीवक के होते, हमारी जरूरत नहीं रही, जंगल की राजकीय व्यवस्था खराब होने के कारण आपके सम्मुख हाजिर होना पड़ा। कहा है जिसकी हार न चाही जाए, उसे शुभ-अशुभ, प्रिय-अप्रिय बात जबरदस्ती कह देनी चाहिए।'

'पहेलियाँ मत बुझाओ। साफ-साफ कहो।' पिंगलक ने कहा।

'क्षमा करें देव, संजीवक ने मुझे अकेले में कहा है कि मैंने पिंगलक की दुर्बलताएँ, सबलताएँ देख ली हैं। उसे शीघ्र ही यमलोक पहुँचाकर मैं इस जंगल का राजा हो जाऊँगा।' यह सही है कि जो राजा अपने मंत्री पर अंधा विश्वास रखता है, वह घमंड में मतवाला हो जाता है। वह फिर राजा को तुच्छ समझने लगता है।

'फिर मुझे क्या करना चाहिए।' पिंगलक ने कहा, 'वह तो मेरे प्राणों से भी प्यारा है। उस पर संदेह करने के लिए मन तैयार ही नहीं है। संजीवक अच्छा है।'

'महाराज!' दमनक ने कहा, 'आप ऐसा तो नहीं सोचते कि वह बड़े शरीर वाला है? पर है तो घासखोर! आप जानते ही होंगे कि आपके सारे शत्रु मांसखोर हैं इसलिए यह आपका विश्वासी संजीवक आपके किसी काम का नहीं है। अब इस पर दोष लगाकर इसका काम तमाम कीजिए।'

'ठीक है पर मैंने तुम्हारे कहने पर ही उसे जीवनदान दिया है। मैं भला उसे कैसे मार सकता हूँ। यदि किसी ने जहरीला पेड़ लगा दिया है तो नहीं काटना चाहिए। . . . हम जिसे शिखर पर चढ़ाते हैं, उसे ही नीचे गिराते हैं, यह अत्यन्त लज्जा की बात है। उपकार करने वालों के प्रति उपकार करना बड़ी बात नहीं पर अपकारी के प्रति उपकार करना ही साधुता है। यदि वह मेरे प्रति बैर रखता है तो भी मुझे उसके प्रति सहृदय रहना चाहिए।'

'पर स्वामी शत्रु को क्षमा करना न बुद्धिमानी है और न धर्म।' दमनक ने कहा।

'फिर भी।'

'आप जरा सोचिए, आप पर हिंसक मांसखोर कई जानवरों ने आक्रमण कर दिया तो आप अपनी रक्षा कैसे करेंगे? क्योंकि आपका यह मित्र संजीवक तो घास खाता है। . . . कहीं आप इसकी संगत में वैसे ही न हो जाएं। यह सर्वविदित है कि संगत का असर स्वभाव पर पड़ता है। जैसे दुर्योधन के साथ भीष्म भी गाय चुराने चले गये। जैसे खटमल के दोष से जूं मारी गयी।'

पिंगलक ने पूछा, 'वह कैसे?'

दमनक ने बताया।

जूं और खटमल की कथा

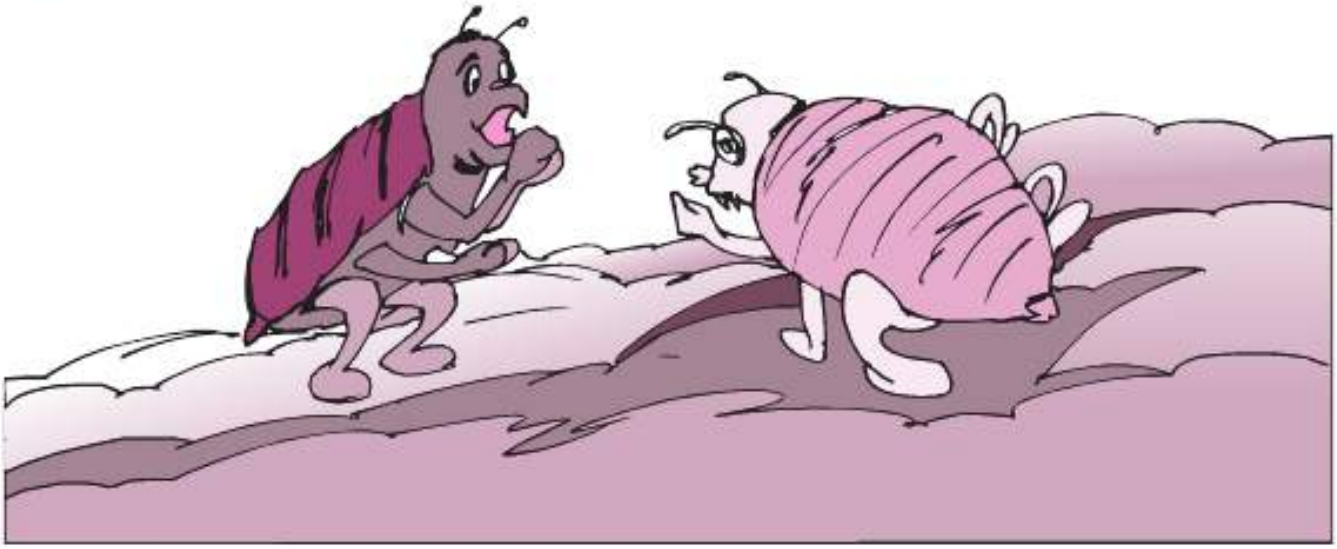

एक राजा के शयनकक्ष में पलंग पर श्वेत चादर बिछी थी। वह रेशमी थी। वहां सफेद वस्त्रों पर एक मंदविसर्पिणी नाम की सफेद जूं थी। जब राजा सोता था तब वह उसका खून चूसकर मजे से अपना जीवनयापन कर रही थी। एक दिन उसी शयनकक्ष में घूमता हुआ अग्निमुख नाम का खटमल जूं से मिला। उसने उसे हिदायत दी कि यह जगह तुम्हारे लिए ठीक नहीं है, कोई धक्के मारकर निकाले, इसके पहले तुम यहां से नौ-दो ग्यारह हो जाओ।

खटमल ने नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा, 'छोटे से छोटे आदमी के घर जाने पर कहते हैं, 'आइए . . . पधारिए, बैठिए, बड़े दिनों के बाद दर्शन दिये, क्या हाल है, कुशल-मंगल तो है।' यह धर्म मोक्ष की ओर ले जाता है। मैंने सदा बेस्वाद रक्त चूसा है। यदि तू मेरी मदद करे तो मैं स्वादिष्ट भोजन करने वाले राजा का स्वादिष्ट रक्तपान करके अपना जीवन सफल बनाऊं। राजा और रंक के लिए जीभ का स्वाद एक-सा है। यदि इस जीभ को संतुष्ट करने का काम न होता तो कोई किसी का सेवक नहीं होता। इस सृष्टि में कठिन से कठिन काम पेट के लिए ही होता है। अतः मुझ भूखे को

तुम्हारे घर में भोजन मिलना ही चाहिए। तू अकेली ही राजा का स्वादिष्ट खून चूसे, यह ठीक नहीं है।'

'मैं तो राजा जब सो जाता है, तब उसका खून चूसती हूँ।' जूं ने लम्बे स्वर में कहा, 'पर तू चंचल है। ठहर और मनचाहा खून चूस।'

'वायदा रहा कि तू पहले खून चूसेगी और मैं बाद में।'

उसी बीच राजा अपनी खाट पर आकर लेट गया। राजा जागता था पर चपल खटमल को धैर्य कहां। उसने उसकी जाग्रतावस्था में भी खून चूसा।

राजा चौंककर उठा। उसने अपने नौकरों को आदेश दिया कि तुरन्त पता लगाया जाए कि इस बिस्तर में खटमल है या जूं।

उपदेश देने पर स्वभाव नहीं बदला जा सकता। गर्म पानी ठंडा हो सकता है पर आदमी का स्वभाव नहीं।

खटमल तो चंचल था। तुरन्त पलंग की सेंध में घुस गया पर जूं कपड़े के जोड़ में दिख गयी। उसे तुरन्त मार दिया गया।

'इसलिए स्वामी अलग गुणवाले को आश्रय नहीं देना चाहिए। मेरा कहना मानिए और संजीवक को मार डालिए वर्ना वह आपको मार डालेगा। जो अपनों को निकाल देता है और अपरिचितों पर विश्वास करता है, वह राजा ककुद्रम की भांति मारा जाता है।'

'वह कैसे?'

दमनक ने कहा, 'ऐसे।'

क्रमशः (पंचतंत्र से साभार)

आओ खेलें

हरिन्दर सिंह गोगना

चिंकी और पिंकी ज्यादा समय मम्मी के मोबाइल में गेम्स खेलने व टीवी देखने में बिताती थीं। दोनों बहनों की मम्मी कितनी बार उन्हें समझा चुकीं थीं कि थोड़ा समय तो मोबाइल व टीवी के आगे बिताना ठीक है मगर लगातार घंटों मोबाइल, टीवी की स्क्रीन में आँखें गड़ाये रखना न केवल नजरें कमजोर करता है बल्कि पढ़ाई का समय भी खराब होता है। लेकिन दोनों बहनें जैसे मम्मी से तो डरती ही नहीं थीं हाँ पापा के डर से शाम को उनके घर लौटने से पहले जरूर पढ़ने बैठ जातीं और होमवर्क निपटा लेतीं। उनका मोबाइल प्रेम तो दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा था जो कि चिंता की बात थी।

एक दिन चिंकी की मम्मी ने उनके पापा से बात की तो उन्होंने गुस्से के बजाय प्यार से समझाने की योजना बनाते हुए दोनों बहनों को साथ लिया और नजदीक के पार्क में चले गये।

चिंकी और पिंकी ने देखा कि उनके पापा अपने साथ एक फुटबाल भी लाये थे। फिर उनके पापा बोले, 'चलो हम फुटबाल खेलते हैं।' खेलते-खेलते कुछ समय ही बीता था कि चिंकी की सांस फूलने लगी।

'बेटा, तुम रोजाना ज्यादा चटपटी व मसालेदार चीजों का सेवन जो करती हो यह उसी का परिणाम है। इतनी छोटी उम्र में तुम्हारी आँखों पर चश्मा भी लग गया है। यह सब मोबाइल के ज्यादा इस्तेमाल की वजह से है।' चिंकी के पापा ने खेल रोकते हुए कहा।

'पापा मोबाइल तो आज सभी इस्तेमाल करते हैं। सबके पास मोबाइल है। आज यह सब की जरूरत बन चुका है। इसमें नई-नई खोजें कर सकते हैं। जब भी मन उदास होता है

यह हमारा मनोरंजन करता है। इसके बगैर तो बोर हो जाते हैं।' पिंकी ने कहा।

'मैं तुम्हारे साथ सहमत हूँ मगर हर चीज की एक हद होती है। मान लो हमें दो रोटियों की आवश्यकता है मगर स्वाद-स्वाद में हम चार खा जायें तो जाहिर सी बात है कि बदहजमी तो होगी ही। इसी तरह मोबाइल इस्तेमाल के लिए ही बना है मगर इसका इस्तेमाल एक निश्चित समय तक होना चाहिए। लगातार घंटों तक मोबाइल, कम्प्यूटर के आगे सिर झुकाये बैठे रहने से आँखों पर तो बुरा प्रभाव पड़ता ही है एक ही जगह देर तक बैठे रहने से शारीरिक बीमारियाँ भी पैदा होती हैं। मैं तुम्हें आज इस पार्क में इसलिए लेकर आया हूँ ताकि तुम्हें खेलने की आदत डाल कर थोड़ी बहुत शारीरिक कसरत करवा सकूँ। इस बहाने तुम्हारा मोबाइल से थोड़ा ध्यान भी हटेगा। खुली हवा में आँखों को ताजगी तो मिलती ही है और खेलने से पसीना निकलता है जो सेहत के लिए अच्छा होता है। शारीरिक खेलों से दिमाग भी तरोताजा रहता है। दिमाग की बात से याद आया कि हमारे समय में गणित के सवाल सुलझाने के लिए हमारी स्मरण शक्ति तेज होती थी। आजकल तो ज्यादातर बच्चे कैलकुलेटर का सहारा लेने की कोशिश करते हैं। जिससे याददाश्त कम होती है। थोड़ा काम करते हैं तो सांस फूल जाती है। छोटी उम्र में ही बूढ़ों की तरह चश्में लग गये हैं। यह सब नई तकनीक के ही तो नतीजे हैं। मैं यह नहीं कहता कि नई तकनीक का इस्तेमाल न करें। हमें कम्प्यूटर का लाभ उठाना चाहिए, खोजें करनी चाहिए, मनोरंजन भी करें मगर सेहत का भी ख्याल रखें।

इसके लिए रोजाना थोड़ा समय शारीरिक खेलों के लिए भी निकालें। अपनी सहेलियों को भी इस ओर प्रेरित करें ताकि एक साथ खेलने में दिलचस्पी बनी रहे। जंक फूड कम से कम इस्तेमाल करें। ज्यादा मोबाइल

व टीवी के आगे समय न गुजारें। पहले पहले तुम्हें थोड़ा मुश्किल लगेगा मगर फिर आदत पड़ जायेगी। मैंने इतनी बातें कीं पता नहीं तुम लोगों को अच्छी लगीं या नहीं। अगर अच्छी लगीं तो गौर करना वर्ना रहने देना।' पापा ने कहा।

चिंकी व पिंकी ने एक दूसरे की तरफ देखा और सोचने लगीं कि पापा बिलकुल सही कह रहे हैं। वह तो मोबाइल, टीवी के चक्कर में खेलना-कूदना भूल ही गई थीं। आज कितने महीनों के बाद पार्क में खेल कर अजीब सुकून मिला और पापा के साथ भी समय बिता कर अच्छा लगा। ऐसा लगा जैसे सिर से कोई बोझ उतर गया हो। उन्होंने अगले दिन अपनी कुछ सहेलियों को भी पार्क में आकर खेलने के लिए राजी कर लिया था। सभी सहेलियाँ खूब खेलीं। सबको एक दूसरे का साथ अच्छा लग रहा था। उन्हें एहसास हुआ कि शारीरिक खेल अच्छी सेहत के लिए कितने अहम हैं। उन्हें रोजाना खेलते देख मोहल्ले के और बच्चे भी अब पार्क में आकर खेलने-कूदने लगे थे। यह देखकर सभी के मम्मी-पापा भी खुश थे।

- परीक्षा शाखा, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला-147001 पंजाब मोबाइल : 9872325960

कविता

बरखा आई

विष्णु सक्सेना

छमछम करती बरखा आई,
प्यार का दाना बरखा लाई।
चहक रहे हैं भालू बंदर,
हिरण भी दौड़े मस्त कलंदर।
मोर नाचते पर फैलाए,
चिड़िया घर में दुबकी जाए।
निकल पड़े हैं बच्चे सारे,
पलक, वाचा, वरुण औं लाले।

कहते हम पानी के राजा,
बजता देखो इससे बाजा।
कहते देखो कितनी अच्छी,
पूर्ति रानी की ये मस्ती।
जी भर कर हम मौज उड़ाएँ,
नावों की हम दौड़ लगाएँ।
काली पीली गोरी नावें,
बढ़ती गिरती रुकती नावें।
क्या अजब ये खेल मचा है,
बरखा का भी एक नशा है।
मस्ती बरसा बरखा आई,
बचपन महका बरखा आई।
बरखा आई बरखा आई,
विख्यात गाओ बरखा आई।

- एस.जे. 41, शास्त्री नगर, गाजियाबाद-201002 मोबाइल : 9896888017

से छुआया, सिंघाड़ों की बोरी से छुआया और फिर अपने मस्तक से लगा कर जेब में रख लिए।

दादाजी ने आशीर्वाद की मुद्रा में दायां हाथ उठाकर कहा - 'ईश्वर करे, तुम्हारा सारा सौदा खूब अच्छी कीमत में जल्दी ही बिक जाये।'

सिंघाड़े वाला दादाजी के आशीर्वाद पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त किये बिना आगे बढ़ गया। राम अपने दादाजी के साथ घर के अन्दर आ गया।

सिंघाड़े की थैली राम की माँ को पकड़ा कर दादा जी पुनः लान में टहलने लगे। राम ने भी उनका अनुसरण किया।

राम ने उनके साथ टहलते हुए कहा - 'दादा जी ! अगर आप मोलभाव करते तो वह आदमी बीस रुपये किलो में ही सिंघाड़ा दे देता।'

उसकी बात सुनकर दादाजी बोले - 'बेटा ! इस भयंकर सर्दी में कितनी दूर से सिंघाड़ा ढोकर लाया होगा वह। उसके पास लगभग पच्चीस-तीस किलो सिंघाड़ा होगा। यदि उसने पंद्रह रुपये प्रति किलो के भाव से सिंघाड़ा खरीदा होगा और पच्चीस रुपये प्रति किलो के भाव से बेच रहा है, तो भी उसे दस रुपये प्रति किलो के हिसाब से दिन भर में ढाई-तीन सौ रुपये की ही बचत होगी। इससे वह मुश्किल से अपने परिवार की जरूरतों की पूरा कर सकेगा। मुझे इन मेहनतकश लोगों से छोटी-छोटी बचत के लिए मोलभाव करना अच्छा नहीं लगता। हाँ ! यदि किसी बड़ी दुकान से ज्यादा पैसों का कोई सामान खरीदना होता है तो मोलभाव करना अच्छा लगता है।'

दादाजी की बात सुनकर राम निरुत्तर हो गया, मगर उसे तो सिंघाड़े वाले पर गुस्सा था। अतः वह बोला - 'कैसा झुंझला कर कह रहा था कि दायें हाथ से पैसे दो।

अरे ! अपना पैसा लो और आगे बढ़ो। इस हाथ से दो, उस हाथ से दो - इसका क्या मतलब? और ऊपर से आप आशीर्वाद देने लगे उसे।'

उसकी बात सुन कर दादाजी हँसे।

बोहनी

डॉ. गोपाल कृष्ण शर्मा 'मृदुल'

राम के दादा जी ऊनी चादर ओढ़े लॉन में टहल रहे थे। जाड़ा पूरे जोर पर था। नौ बजे के बाद भी धूप कहीं दिखाई नहीं दे रही थीं। चारों ओर घना कोहरा फैला हुआ था। सर्दी के कारण छोटे बच्चों के स्कूल एक सप्ताह के लिए बन्द करने का आदेश जिलाधिकारी ने दिया था, इसी लिए राम आज स्कूल नहीं गया था। राम भी सिर पर टोपा बाँधे तथा ढेर सारे ऊनी कपड़े पहने अपने दादाजी के पीछे-पीछे टहल रहा था।

सड़क पर एक आदमी साइकिल पर बोरी रखे जा रहा था। वह बीच-बीच में आवाज लगाता - 'सिंघाड़ा ले लो, सिंघाड़ा।'

रामू के दादाजी ने उसे रोक कर पूछा - 'क्या हिसाब लगाया सिंघाड़ा?'

उसने कहा - पच्चीस रुपये का एक किलो।

दादाजी गेट खोल कर सड़क पर आ गये। उनके पीछे-पीछे राम भी सड़क पर आ गया। दादाजी ने एक किलो सिंघाड़ा तौलाया और जेब से पच्चीस रुपये निकाल कर गिने। सिंघाड़े वाले ने पॉलीथीन की थैली में सिंघाड़ा डाल कर थैली दादाजी की ओर बढ़ा दी।

दादाजी ने दायें हाथ से थैली पकड़ ली और बायें हाथ से पच्चीस रुपये सिंघाड़े वाले की ओर बढ़ाये।

इस पर सिंघाड़े वाला तुनक कर बोला - 'दायें हाथ से दीजिए। आपके हाथों से बोहनी कर रहे हैं।'

सिंघाड़े वाले का दादाजी से तुनक कर बोलना राम को अच्छा नहीं लगा किन्तु वह उस समय चुप ही रहा।

मगर सिंघाड़े वाले की बात सुन कर दादाजी के मुँह से निकला - 'अरे !' और उनकी मुख-मुद्रा ऐसी हो गयी मानो उनसे कोई बड़ा अपराध हो गया हो। उन्होंने जल्दी से सिंघाड़े की थैली बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथ से पैसे सिंघाड़े वाले की ओर बढ़ा दिये।

सिंघाड़े वाले ने भी पैसे अपने दाहिने हाथ में लिए, फिर कुछ बुदबुदाते हुए उन पैसों को तराजू

फिर राम को समझाते हुए बोले – 'बेटा ! वह दिन की पहली बिक्री कर रहा था। दायें हाथ से धन मिलना शुभ माना जाता है, इसीलिए उसने मेरी भूल की ओर इंगित करते हुए दाहिने हाथ से विक्रय मूल्य देने के लिए कहा। इसमें उसने बुरा क्या किया? मुझसे भूल हुई थी, जिसे मैंने स्वीकार करते हुए तत्काल सुधार लिया। इससे वह भी खुश हो गया और मैं भी खुश। इसीलिए कहा गया है कि अपनी गलती का पता चलते ही उसे तुरन्त स्वीकार कर लेना चाहिए।

राम को दादाजी की बातें बहुत प्रेरक लगीं। उसने मन ही मन निश्चय किया कि वह भी जीवन में कभी छोटी-छोटी बचत के लिए मेहनतकश लोगों से मोलभाव नहीं करेगा और अपनी गलती पता चलते ही अविलम्ब उसे स्वीकार लेगा।

शाम को चार बजे राम पार्क में क्रिकेट खेलने जा रहा था। तभी उसने सिंघाड़े वाले को साइकिल से वापस लौटते देखा। वह अपने साथी से बात करता जा रहा था – 'आज ऐसे भले आदमी के हाथों से बोहनी हुई कि सारा सौदा फटाफट बिक गया और अच्छी बचत भी हुई।'

रामू ने यह बात लौट कर अपने दादाजी को बताई तो वह बच्चों की भांति खिलखिला कर हँस पड़े।

– 569क/108/2, स्नेहनगर, आलमबाग, लखनऊ-226005 मोबाइल : 9956846197

कविता

नया रोबोट

डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी

बच्चों वो दिन भी आयेगा
जब रोबोट स्वयं भी देखो
सोच समझकर काम करेगा
सोयेगा-जागेगा वो भी
तुम जैसा आराम करेगा
ऐसा फीड बैक सिस्टम वो
इनके जीवन में छायेगा।
वैज्ञानिक सारंगपाणि ने
ऐसा है रोबोट बनाया।
मिसौरी यूनिवर्सिटी का
गौरव भी जिनने विकसाया,
हवाई अभिमानों में भी
बना सहायक हर्षायेगा।

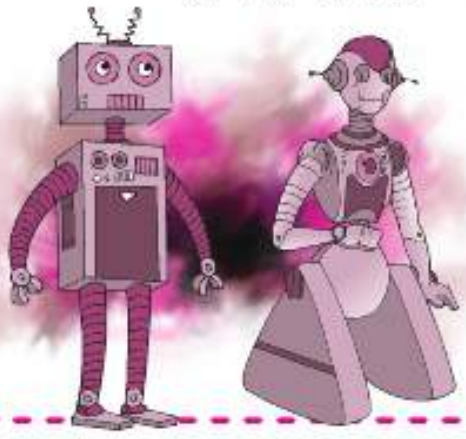

– बरेली, ई-मेल : directoruphindi@yahoo.in

चमत्कारी कलम

अनुराधा गौतम

एक गाँव में एक बालक रहता था। जिसका नाम था हेमवन्त। हेमवन्त को सभी प्रेम से हेमू कहा करते थे। बचपन से ही हेमू चंचल स्वभाव का था, थोड़ा बड़े होने पर उसकी चंचलता और शरारतें और बढ़ गयीं वो जहाँ भी जाता अपनी शरारतों से सबको परेशान करता, हर तरफ तोड़-फोड़ मचाता। सभी उसकी इन शरारतों से परेशान रहते। हेमू के माता-पिता भी उसकी इन शरारतों से परेशान हो चुके थे।

हेमू का यही हाल उसके विद्यालय में भी था, न वो खुद पढ़ता और न किसी को पढ़ने देता, उसका चंचल मन सदा भटकता रहता। अध्यापक भी उससे बहुत परेशान हो गये थे। एक दिन प्रधानाचार्य ने हेमवन्त को अपने पास बुलाकर समझाया कि –

'बेटा हेमवन्त शरारतें करना बुरी बात नहीं पर तुम्हारी शरारतों से किसी को परेशानी नहीं होनी चाहिए, इसके साथ सबसे ज्यादा जरूरी है पढ़ना, ज्ञान हासिल करके ही तुम सफल हो सकोगे और अपना जीवनयापन भली प्रकार से कर सकोगे!'

प्रधानाचार्य जी के समझाने का भी उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा वो वैसे ही शरारतें करता रहा। वार्षिक परीक्षा आयी उसने बिना किसी पढ़ाई के परीक्षा दी, परिणाम ये हुआ कि हेमवन्त फेल हो गया। उसे कोई दुख नहीं हुआ पर इससे उसके माता-पिता को बहुत दुख हुआ। गरीब माँ-बाप की हेमू एक ही सन्तान था और उसके इस तरह के व्यवहार से वो उसके भविष्य के लिए

अत्यधिक चिन्तित हो गये। हेमू ने अपने माता-पिता को दुखी देखा तो सोच में पड़ गया, अब उसके सभी दोस्त अगली कक्षा में पहुँच गये थे, वो हेमू को चिढ़ाने लगे, हेमू को अहसास हुआ पर लाख कोशिश के बाद भी उसका मन एकाग्रचित्त नहीं हो पाया, वो उदास होकर नदी के पास एक वृक्ष के नीचे बैठ गया। उसने एक योगी बाबा को आते देखा तो बाबा पास ही एक वृक्ष के नीचे ध्यान लगाने के लिए बैठने लगे, हेमवन्त उनके पास पहुँच गया, तब तक बाबा ने आँख बन्द कर ली थीं, फिर भी वो हेमवन्त से बोले . . . 'आओ बेटा हेमवन्त।'

हेमवन्त : 'आप मेरा नाम कैसे जानते हैं बाबा।'

बाबा : 'बेटा मैं सब कुछ जानता हूँ तुमको भी और तुम्हारी परेशानी को भी।'

हेमू : 'आश्चर्य से बोला। बाबा आप तो सब कुछ जानते हैं, फिर आप मेरी परेशानी को दूर क्यों नहीं करते!'

बाबा आँख को बन्द करे करे ही मुस्कुराये और बोले! . . .

'बेटा, देखो मेरे पास दो कलम हैं इनमें से एक कलम चमत्कारी है। इसका प्रयोग करके तुम जो कुछ भी पढ़ोगे, लिखोगे सब याद हो जायेगा। पर इस कलम की शक्ति को जाग्रत करने के लिए हर बार तुम्हें मेरी तरह बैठकर शांत होकर ध्यान लगाना पड़ेगा जितना अच्छा ध्यान होगा इसकी शक्तियाँ उतनी ही बढ़ेंगी। 'अब मैं ध्यान करने जा रहा हूँ मेरा ध्यान भंग मत करना', यह कहकर बाबा ने ध्यान शुरू कर दिया।

हेमू ने देखा बाबा के पास दो कलम थीं, इनमें से एक चमकदार और एक साधारण लकड़ी की कलम थी।

हेमू ने सोचा चमत्कारी कलम तो चमकदार ही होगी। यह सोचकर उसने चमकदार पेन उठा लिया। घर आकर उसने ध्यान करना और पढ़ना शुरू कर दिया। शुरू-शुरू में वो कम ध्यान लगा पाता था, धीरे-धीरे उसने देर तक ध्यान करना शुरू कर दिया।

अब उसकी शरारतें कम हो गयीं वो शांतचित्त वाला बालक हो गया। ये बदलाव गाँव तथा

विद्यालय सभी जगह पर सबको नजर आ रहा था।

अध्यापक भी उसकी पढ़ायी से प्रसन्न रहने लगे थे। पुनः परीक्षा का समय आया हेमवन्त ने इस बार परीक्षा अच्छे नम्बरों से पास कर ली। सब खुश थे। हेमवन्त को लगा बाबा ने उसकी मदद की थी सो उसको बाबा की मदद का शुक्रिया अदा करना चाहिए।

बाबा को धन्यवाद करने के लिए वो नदी की तरफ चल पड़ा। कुछ समय बाद उसे वही बाबा नजर आये।

उसने बाबा को प्रणाम किया और धन्यवाद कहा।

बाबा ने कहा - 'हेमवन्त मैं तुमसे ही मिलने आ रहा था, तुम जो कलम उस दिन ले गये वो चमत्कारी नहीं थी, वो कलम तो ये है।'

हेमवन्त सोच में पड़ गया और बोला - 'बाबा फिर मेरे पास जो कलम थी वो चमत्कार कैसे कर रही थी?'

बाबा मुस्कुराते हुए बोले - 'बेटा हेमवन्त ! मेरी किसी भी कलम में चमत्कार नहीं है।'

हेमवन्त आश्चर्य से बाबा की बात सुनता रहा।

बाबा : 'बेटा सत्य तो यह है कि चमत्कार किसी भी कलम में नहीं होता। चमत्कार तो व्यक्ति की मेहनत व लगन में होता है।'

तुमने ध्यान लगाकर अपने मन को एकाग्रचित किया। जिससे तुम्हारी मन की चंचलता पर तुम्हें विजय मिली और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जो तुमने प्रयास किया उससे ही तुम्हें सफलता मिली।

जो भी व्यक्ति एकाग्र मन से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास करता है उसे सफलता अवश्य ही प्राप्त होती है।

हेमवन्त ने एकाग्रमन, लगन, प्रयास से प्राप्त होने वाली सफलता के गूढ़ मंत्र को जानकर बाबा को धन्यवाद दिया और दोनों ही अपनी-अपनी राह की ओर चल पड़े।

- 61 शान्तिनगर, सरोजनीनगर,
लखनऊ-226008

रक्षाबंधन

डॉ. आराधना अस्थाना

रक्षाबंधन आया है खुशियाँ ही खुशियाँ लाया है।
खुशियों का त्योहार है, भाई-बहन का प्यार है।
रंग-बिरंगी राखी है, डोरी संग बाँधी जाती है।
राखी से सजी कलाई है, झूम-झूम लहराई है।
भाई-बहन करें ठिठोली हैं, संग इनके सब हमजोली हैं।
लड्डू, पेड़े, बर्फी, काजू संग, मम्मी पापा मामा-बुआ संग,
खुशियाँ ही खुशियाँ लाया है, प्यारा रक्षाबंधन आया है।
छोला पूड़ी और कचौड़ी, थाली भरकर मिर्च पकौड़ी
छक-छक कर हम खायेंगे, नानी के घर जायेंगे बुआ को बुलायेंगे।
खूब सजी है प्यारी राखी, खूब लुभाती न्यारी राखी
आड़ी तिरछी गोल-गोल है, बहनें लातीं मोल-मोल हैं।
सस्ती महँगी जैसी भी है, बहनों के मन जैसी ही है।
भरा है इसमें प्यार बहन का, मीठा-तीखा राग जतन का
प्रेम बढ़ाओ हिल-मिल गाओ, आपस में मिल खुशी मनाओ।

1/790-डी, विशालखण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ-226010 (उ.प्र.)

वर्ग पहेली-1

(बालवाणी, मई-जून, 2019 के अंक पर आधारित)

कूट-संकेत

सुबोध कुमार दुबे

बायें से दायें

1. कविता भोंदू और तरबूज के कवि (8)
2. अमेरिकी वैज्ञानिक हेन ड्रिक बेक लैंड द्वारा खोजी गई प्लास्टिक की किस्म (5)
3. चित्रोत्पला गंगा कही जाने वाली शृंगी ऋषि के आश्रम से उत्पन्न प्रसिद्ध नदी (4)
4. प्लास्टिक जाति का एक लोकप्रिय कपड़ा (4)
5. सूर्यलता जायसवाल रचित कहानी का शीर्षक (5)
6. रोचना, महापुरुष का नाम (3)
7. लोक कथा दयालु बालक के प्रस्तुतकर्ता का उपनाम (3)
8. आजीवन समाज सेवा में संलग्न रहकर सामाजिक विकास में योगदान देने वाले विद्वान महापुरुष (9)
9. चित्रकथा राजिम की कहानी के चित्रकार (7)
10. अन्धकार (2)

ऊपर से नीचे

11. छत्तीसगढ़ का एक तीर्थ (3)
12. प्रेम (2)
13. देवाशीष उपाध्याय रचित कहानी का शीर्षक (3)
14. नुकसान देह प्लास्टिक की किस्म जिसकी खोज सन् 1835 में हुई (4)
15. कविता 'विश्व के प्रथम' के रचनाकार (5)
16. पूर्वी बंगाल (ढाका) स्थित गाँव जहाँ वैज्ञानिक मेघनाथ साहा का जन्म हुआ (5)
17. मेघनाथ साहा के पिता का नाम (4)
18. डॉ. अम्बेडकर द्वारा प्रकाशित मराठी पाक्षिक पत्र (7)
19. भारतीय विज्ञान कांग्रेस और राष्ट्रीय विज्ञान संस्थान के अध्यक्ष तथा लोकप्रिय वैज्ञानिक (6)
20. जिन्दगी कविता के बाल रचनाकार (3)
21. त्रिदेवों में से एक महादेव (3)
22. बाल कवयित्री समीक्षा की कविता का शीर्षक (3)
23. राजकुमार सचान की बाल कविता का शीर्षक (2)

उत्तर इसी अंक में अन्यत्र देखें

रा 11	■	1	न्द्र		ह			ने 12	श 13
	बे			इ		पो 14	■		
3 म			दी	टे			न	■	थ
■	■	की 15	■	■	शे 16		17	ब 18	19
5 अं 20		ली		रो		र	ग		घ
	■	शं 21	■			■		ष्कृ	
6	ल		■		ताली	दा 23	थ		थ
■	■		7 आ				■		
8 भी		रा			म्बे			र	
9	र	मा			सा		■	10	

- 14/765, इन्दिरानगर, लखनऊ-226016 मोबाइल : 9305220059

बिस्कुट लाल

हरदर्शन सहगल

उसका असली नाम बिम्बिसार था। नाम तो बहुत अच्छा था। बिम्बिसार, यह नाम हमारी प्राचीन संस्कृति से जुड़ा हुआ है। गौतमबुद्ध के समकालीन हिन्दू राजा, जो अजातशत्रु के पिता थे, का नाम बिम्बिसार ही था।

इस ऐतिहासिक नाम का अर्थ, धीरे-धीरे सारे विद्यार्थी जान गए थे। फिर भी सब साथी उसे बिस्कुट लाल कह कर चिढ़ाने की कोशिश करते थे। किन्तु बिम्बिसार इसका ज़रा भी बुरा नहीं मानता था। चिढ़ता नहीं था। धीरे से हँस देता। इसी नाम के कारण उसे बहुत से बिस्कुट, हर रोज़, खाने को मिलते थे। वह वास्तव में ही लाल बिस्कुट खाने का बहुत शौकीन था। उसे इसी बिस्कुट लाल के नाम, पर ही तो इतने बिस्कुट खाने को मिल रहे थे।

बच्चे नित्य प्रति अपने जेब खर्च में से, कुछ पैसे बचा कर, उसे लाल से लाल बिस्कुट खिलाते रहते। कहते - लो प्यारे, बिस्कुट खाओ।

बिस्कुट लाल खुशी खुशी बिस्कुट ले लेता। 'थैंक्यू' कहता और खाना शुरू कर देता - खुश रहो मेरे साथियो!

बच्चों के बिस्कुट खिलाने का असली कारण दूसरा था। बिस्कुट लाल वाक्पटु था, और पढ़ाई में बेहद होशियार।

वह अपने साथियों को होमवर्क करवा देता। मज़े की बात यह थी कि यदि कक्षा में कोई छात्र या छात्रा ठीक उत्तर नहीं दे पाते तो बिस्कुट लाल झट से बोल पड़ता - मैम! कल तो इसने मुझे सही उत्तर बताया था- बेचारा आज आपके सामने भूल गया। वह स्वयं सही उत्तर देकर कहता- क्यों सर (या मैम) यही है ना सही जवाब।

अध्यापकों को बिस्कुट लाल का ऐसा नाटक देखकर हँसी आ जाती। साथी, दंड से बच जाता।

कक्षा में केतकी पढ़ाई में बहुत कमजोर छात्रा थी। वह बिस्कुट लाल को चार बिस्कुट खिलाती थी। इस बात का विशेष ध्यान रखती थी कि बिस्कुट एकदम लाल हों।

एक दिन केतकी बोली - 'मेरे अच्छे भैया, कल मैं तुम्हारे लिए खूब सारे लाल-लाल बिस्कुट लाकर दूँगी।'

केतकी ने अपना पूरा जेब खर्च बिस्कुटों पर खर्च कर दिया। घर जाकर उसने अपने ड्राइंग

बाक्स से लाल टिकियों से सारे बिस्कुट रंग डाले।

दूसरे दिन वह बड़े उत्साह से बिस्कुट लाल के पास पहुँची और उसी जोश से बोली - 'लीजिए बिस्कुट लाल जी, एकदम चटख लाल बिस्कुट।'

इतने सारे बिस्कुट पाकर बिस्कुट लाल निहाल हो गया। तुरंत सारे बिस्कुट खा डाले।

पौना घंटा भी न बीता था कि बिस्कुट लाल को चक्कर आया। वह बरामदे में बेहोश होकर गिर गया। चारों ओर अफरा-तफरी मच गई।

हेडमास्टर साहब को सब कुछ समझ में आ गया। यह सब रंगों, में पड़े कैमिकल्स (रसायनों) का प्रभाव था। उन्होंने तुरंत डॉक्टर को बुलवाया।

डॉक्टर के आने से पूर्व उन्होंने केतकी को दण्ड सुनाया। उसे स्कूल समय तक, एक कमरे में बंद कर दिया गया।

डॉक्टर साहब आए। उन्होंने दवा दी। ठीक उपचार होने से बिस्कुट लाल उठ बैठा। उसे सब कुछ बताया गया।

बिस्कुट लाल धीमे-धीमे स्वर में बोल रहा था - 'मेरी दीदी केतकी को बुलाओ। वह बहुत अच्छी है।' बिस्कुट लाल रोने लगा।

उसे रोता देखकर हेडमास्टर साहब ने केतकी को कमरे से निकलवाया।

केतकी भी रो रही थी।

बिस्कुट लाल ने कहा गलती मेरी थी। मैं ज्यादा से ज्यादा बिस्कुटों के लिए पेटू हो चला था। इस भूल की सज़ा मुझे मिलनी चाहिए। केतकी बेचारी से तो नादानी हो गई। मैंने अपने अच्छे नाम बिम्बिसार पर लांछन लगाया है।

और मैंने भी, केतकी बोली, आज से मैं मेहनत से पढ़ाई किया करूँगी। सभी बच्चों ने उसकी हाँ में हाँ मिलायी।

- 5-ई-9, 'संवाद', डुप्लैक्स कॉलोनी, बीकानेर-334003 (राजस्थान)
दूरभाष : 0151-2529067

चन्द्रग्रहण

सन्तोष कुमार सिंह

मम्मी मुझको चन्द्रग्रहण के, बारे में कुछ समझा दो।
राहु-केतु क्यों क्रोधित इन पर, होते मुझको बतला दो।।
मम्मी बोली, देव-असुर मिल, सागर मंथन किया कभी।
अमृत घट निकला था उसमें, पीने उत्सुक हुए सभी।।
देव-असुर सब पंक्ति बनाकर, बैठे अमृत था पाना।
देवरूप धर राहु पी गया, सूर्य-चन्द्र ने पहचाना।।
चक्र सुदर्शन चला विष्णु ने, काट राहु की गर्दन दी।
लेकिन वह तो अमर हो गया, अमृत बूँद गया वह पी।।
राहु-केतु दो असुर बन गए, वही चन्द्र को ग्रसते हैं।
कभी-कभी इनके चंगुल में, सूर्यदेव भी फँसते हैं।।
बड़े पुत्र ने तभी बीच में, अपनी माँ को टोक दिया।
बात पुरानी हुई आपकी, कथा कहन से रोक दिया।।
छोटे भाई से फिर बोला, गुरुवर सत्य बताते हैं।
जितने ग्रह हैं सभी सूर्य के, चक्कर नित्य लगाते हैं।।
किन्तु चन्द्रमा पृथ्वी ग्रह का, चक्कर सदा लगाता है।
और रोशनी पाता रवि से, वह उपग्रह कहलाता है।।
सूर्य, चन्द्र के मध्य घूम कर, जब पृथ्वी आ जाती है।
सूर्य रोशनी रुके चन्द्र पर, परछाई ही आती है।।
ये परछाईं रहती जब तक, चन्द्रग्रहण कहलाता है।
बढ़ जाती है पृथ्वी आगे, ग्रहण मोक्ष हो जाता है।।

'चित्र निकेतन', बी-45, मोतीकुंज एक्सटेंशन, मथुरा-281001 मोबाइल : 9456882131

ग्लोबल वार्मिंग का गहराता संकट

जसविंदर शर्मा

वैज्ञानिकों ने पाया है कि पिछली एक सदी से धरती के औसत तापमान में एक डिग्री फॉरनहाइट की वृद्धि हुई है। वैज्ञानिकों को पूरा विश्वास है कि आने वाले 200 वर्षों में हमारी धरती के औसत तापमान में 6 डिग्री फॉरनहाइट तक की बढ़ोत्तरी हो जाएगी। धरती पर बढ़े इस तापमान से वर्षा के पैटर्न में विचित्र बदलाव होंगे, समुद्र का जलस्तर बहुत बढ़ जाएगा तथा धरती पर पौधों और प्राणियों के जीवन बुरी तरह प्रभावित होंगे।

धरती पर वातावरण के परिवर्तन सम्बन्धी इंटर-गवर्नमेंट पैनल यानि आई.पी.सी.सी. ने निष्कर्ष निकाला है कि ग्रीनहाउस गैसों के घनत्व में वृद्धि का मुख्य कारण है कि पिछले 100 सालों में हमने जीवाश्म ईंधनों यानि पेट्रोल व डीजल आदि का जमकर इस्तेमाल किया है तथा वनों की अंधाधुंध कटाई की है। औद्योगिक क्रांति के कारण धरती का तापमान गरमाने लगा है।

कुछ तथ्य बेहद चौंकाने वाले हैं। वैज्ञानिकों ने पाया है कि वातावरण में कार्बन डाई-ऑक्साइड का स्तर सन् 1958 के बाद 0.53 प्रतिशत अर्थात 2 कण प्रति दस लाख कण की गति से बढ़ा है। पौधों में कार्बन डाई-ऑक्साइड लेने की क्षमता घटी है क्योंकि वनों का लगभग सफाया हो चुका है। मौजूदा काल में कार्बन डाई-ऑक्साइड का घनत्व 380 कण प्रति दस लाख कण है तथा सन् 2050 में यह घनत्व बढ़कर 550 कण प्रति दस लाख कण हो जाएगा। ग्रीनहाउस की अन्य गैसों के घनत्व में भी आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि हो रही है जो मानव जाति के लिए आने वाले खतरों की तरफ संकेत है।

ग्लोबल वार्मिंग की मौजूदगी के प्रमाण हमारे सामने हैं। पिछले कुछ दशकों से लगातार बढ़ते गर्म वर्ष तथा भयावह समुद्री तूफान जैसे सुनामी, कैटरीना आदि बताते हैं कि धरती का तापमान बढ़ने से इसके मिजाज

में तेजी से बदलाव आ रहे हैं। यूरोप के कुछ देशों में ग्रीष्मकाल में तापमान 40 डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक होना ग्लोबल वार्मिंग के प्रत्यक्ष संकेत हैं।

ग्लेशियर वातावरण परिवर्तन के सबसे संवेदी सूचक माने जाते हैं। वैज्ञानिकों ने 1970 से लेकर अब तक मुख्य ग्लेशियरों की इन्वेंटरी बनाई और पाया कि हिमालय, अलास्का और एंडी पर्वतमालाओं के ग्लेशियर लगातार सिकुड़ रहे हैं। आर्कटिक कैप पिघल रही है। आर्कटिक इलाकों में साधारणतया गर्म क्षेत्रों वाले पौधे उगना यह दिखाता है कि हम लोग बहुत जल्दी बहुत बड़ी मुसीबत में फंसने वाले हैं।

जलवायु परिवर्तन से वैश्विक स्तर पर मानव स्वभाव में उत्तेजना, हिंसा और संघर्ष की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है जिसके कारण दुनिया के देशों में इतनी मारकाट की स्थितियाँ उत्पन्न हो रही है।

कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी में वैज्ञानिकों ने एक शोध में पाया कि सूखा पड़ने या तापमान का सामान्य से अधिक रहने, ज्यादा बारिश होने या बाढ़ और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के कारण भी इन्सान के स्वभाव में तेजी से बदलाव आ रहे हैं। इस शोध में कहा गया है कि अगली आधी सदी में वैश्विक तापमान में दो डिग्री की बढ़त हिंसा की सम्भावनाओं को 50 फीसदी तक बढ़ा सकती है।

– 205, जी.एच.-3, सेक्टर-24, पंचकुला-134109 (हरियाणा) मोबाइल : 9872430707

विविध

वर्ग पहेली-1 का हल

रा ↓11		1→ च	न्द्र	मो	ह	न	दि	ने ↓12	श ↓13
जि	2→ बे	के	ला	इं	ट	पो ↓14		ह	प
3→ म	हा	न	दी	4→ टे	री	ली	न		थ
		का ↓15			शे ↓16	म	ज ↓17	ब ↓18	मे ↓19
5→ अ ↓20	स	ली	ही	रो	ब	र	ग	हि	घ
दि		श ↓21		सं ↓22	ड़ा		न्ना	ष्कृ	ना
6→ ति	ल	क		दे	ताली	दा ↓23	थ	त	थ
		र	7→ आ	श	ट	दा		भा	सा
8→ भी	म	रा	व	अ	म्बे	ड	क	र	हा
9→ प	र	मा	त्मा	प्र	सा	द		10→ त	म

अनवरत यात्रा

शशि गोयल

लंबी ऊँची उड़ाने भरते नदी, पहाड़, समुद्र लांघते कैसे बिना भटके हर वर्ष विशाल पक्षियों का झुंड आ जाता है यह अद्‌भुत ही है। हर अक्टूबर माह में तकरीबन 300 प्रजाति की मुर्गियों, बत्तखों की जातियाँ लंबी आकाशीय उड़ाने भरते भारत की विभिन्न झीलों में उतरती हैं। इन पक्षियों की लंबी टांगें होती हैं, कटारी जैसी चोंच होती है।

कुछ पक्षी साइबेरिया से आते हैं तो कुछ हिमाचल के ऊपर से उड़कर छोटे-छोटे रास्तों से आते हैं। आखिर ये पक्षी ठीक उसी स्थान पर पहुँच कैसे जाते हैं। वैज्ञानिक परीक्षणों के अनुसार ये पक्षी पर्वत शृंखलाओं, नदी की घाटियों आदि का उपयोग करते हैं। इनके अंदर समय चक्र के अनुसार हारमोन संबंधी परिवर्तन होते हैं। जो इनमें उड़ान की तरंग जगाते हैं पर ये पक्षी अनजाने डगर पर उड़कर हर वर्ष वहीं कैसे जाते हैं यह रहस्य ही है।

साइबेरिया से आने वाले पक्षी गर्मियों के मध्य में साइबेरिया में बच्चों को जन्म देते हैं। भोजन की कमी इन्हें शीत ऋतु के आते ही हिमालय के दोनों ओर सिन्धु और ब्रह्मपुत्र नदी की घाटियों से होकर उप महाद्वीप में खींच लाते हैं यह सब उनके जीवन की सहज प्रक्रिया में हैं।

पक्षी की कुछ प्रजातियाँ नन्हें-नन्हें रैडस्टार्ट, शोवलार, टील जैसी छोटी-छोटी होती हैं तो कुछ राज हंस, वूस्टर्ड जैसे बड़े पक्षी। कुछ दलदली मिट्‌टी में कल्लोल करते हैं तो कुछ झील सरोवर का रुख करतीं पूरे भारत में फैल जाती है और अप्रैल-मई में सब यहाँ से विदा ले लेते हैं। मार्च के प्रारम्भ में उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर से लगभग 176 कि.मी. दूर सागर तट पर स्थित गढ़ीमठ पर एक आश्चर्यजनक घटना घटती है। 12 किलोमीटर लम्बा समुद्रतट समुद्री कछुवे के अंडे देने का विशालतम स्थान है। रिडली कछुवे यहाँ विशाल संख्या में आते हैं लगभग ढाई लाख। और घोंसले बनाकर अण्डे देते हैं। दो सप्ताह की इस

अवधि में इतने अधिक अंडे हो जाते हैं कि कभी कभी अपने खुद के अंडे भी कछुवे गलती से गोद डालते हैं। अनुसंधानकर्ताओं के अनुसार यह आगमन सितम्बर के महीने से आरम्भ होता है और कछुवे 15000 किलोमीटर का रास्ता तय करके गढ़ीमठ पहुँचते हैं।

इसी प्रकार से ईल मछली की यात्रा जन्म से लेकर मृत्यु तक अनवरत रहती है। ये अपने जन्म से ही सहज रूप से एक ही गन्तव्य की ओर यात्रा करना प्रारम्भ कर देती हैं।

करीब दो हजार मील की यात्रा अपने जीवन काल में कर लेती है। गहरे समुद्र में ईल मछली अंडों को जन्म देती है। यह क्षेत्र अधिकांशत : बरमूदा सारागोसा समुद्र के उत्तरी क्षेत्र के नजदीक है। इन्हें अनुसंधान से पहले अन्य जीव लेपटोसेपली कहा जाता था। बाद में ज्ञात हुआ कि ये ईले के अंडे हैं। समुद्र में अंडे पानी से ऊपर आते हैं। यूरोप की नदियों की तरफ बहाना प्रारम्भ कर देते हैं। बहते-बहते ही बढ़ते रहते हैं। तीन साल तक में इनका शरीर पारदर्शी रहता है और जैसे ही ये ईल नदी के पानी में पहुँचती है इसकी पारदर्शिता खत्म हो जाती है और त्वचा दानेदार हो जाती है। नदी में विपरीत बहाव में ये अपनी यात्रा जारी रखती है। जैसे किसी की खोज कर रही हैं। जब यौवनावस्था में बहती है तब तक ईल तीस चालीस इंच लंबी हो जाती है। नर ईल की लंबाई बीस इंच के करीब रहती है और इनकी यात्रा भी नदी तालाब से निकलकर गहरे समुद्र की ओर चल देती है। गर्मी में ये नदी, तालाबों के तल में, निष्क्रिय पड़ी रहती हैं। लेकिन शीतकाल में क्रियाशील रहती हैं इनका मार्ग अंधेरा रहता है। शरदकाल में इन्हें वापस घर जाने की संवेदना जाग्रत होती है। और गहरे समुद्र में पहुँच कर लोप हो जाती हैं बस फिर वहाँ से उनके अंडे ही ऊपर करोड़ों की संख्या में तैरकर आते हैं और फिर इन अंडों की अदृश्य के निर्देश से अनवरत यात्रा प्रारम्भ हो जाती है।

- सप्तऋषि अपार्टमेंट, जी-9, ब्लॉक-3,
सेक्टर-16बी, आवास विकास योजना, सिकन्दरा,
आगरा-282010 मोबाइल : 9319943446

राजिम की कहानी

गतांक से आगे –

परमात्मा प्रसाद श्रीवास्तव
मूल कथा : स्व. प्रेम साईमन

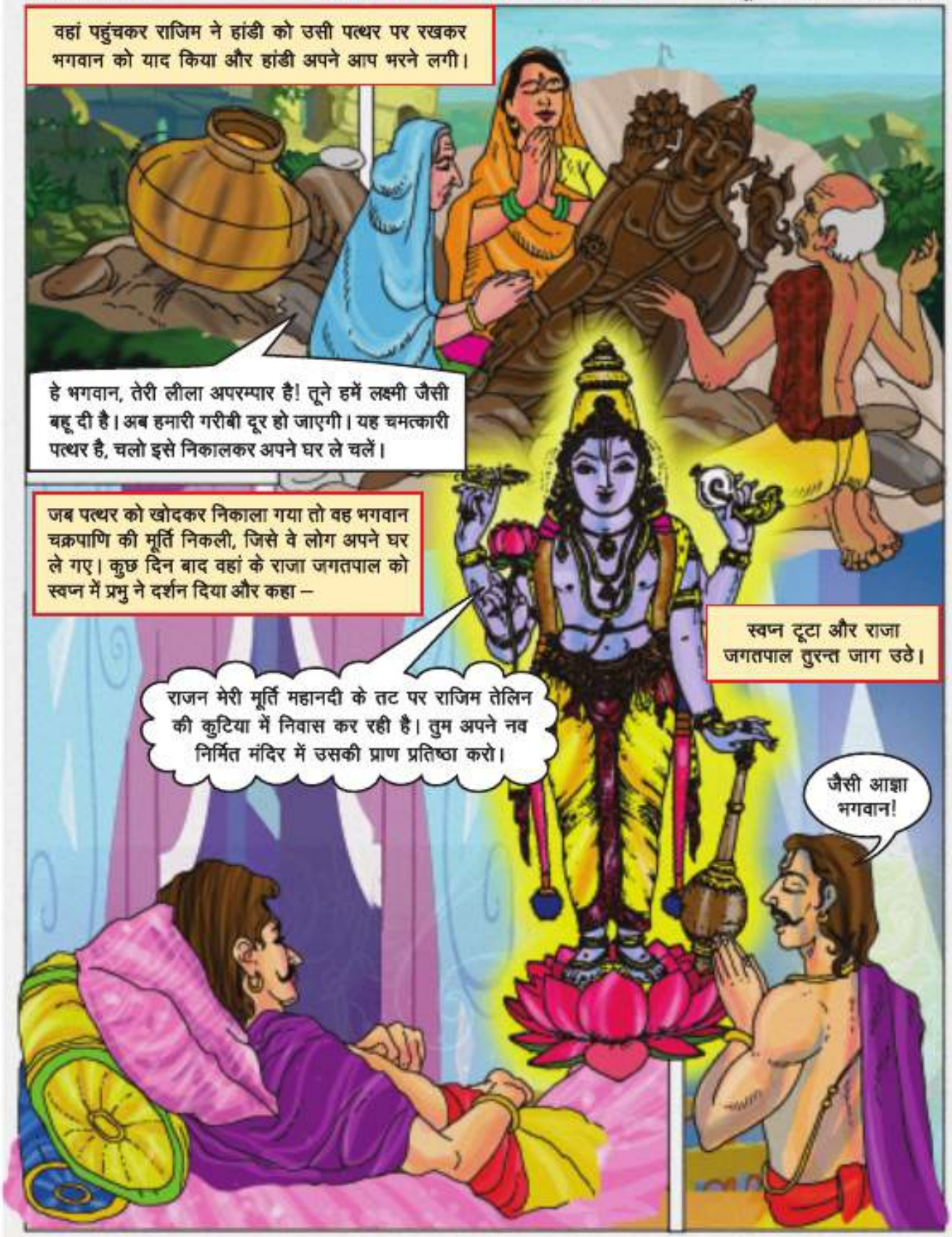

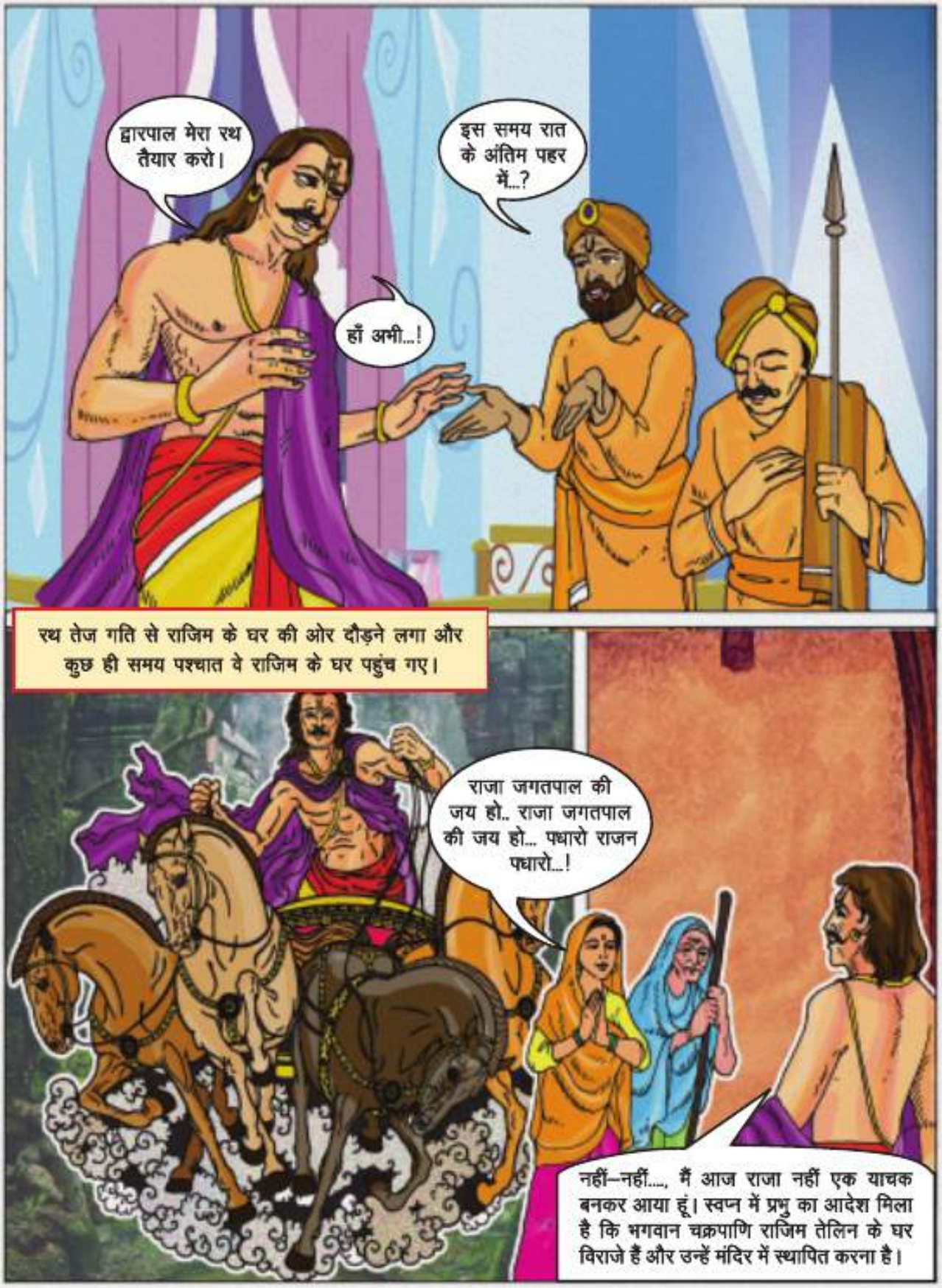
द्वारपाल मेरा रथ तैयार करो।
इस समय रात के अंतिम पहर में...?
हाँ अभी...!
रथ तेज गति से राजिम के घर की ओर दौड़ने लगा और कुछ ही समय पश्चात वे राजिम के घर पहुंच गए।
राजा जगतपाल की जय हो.. राजा जगतपाल की जय हो... पधारो राजन पधारो...!
नहीं–नहीं...., मैं आज राजा नहीं एक याचक बनकर आया हूं। स्वप्न में प्रभु का आदेश मिला है कि भगवान चक्रपाणि राजिम तेलिन के घर विराजे हैं और उन्हें मंदिर में स्थापित करना है।

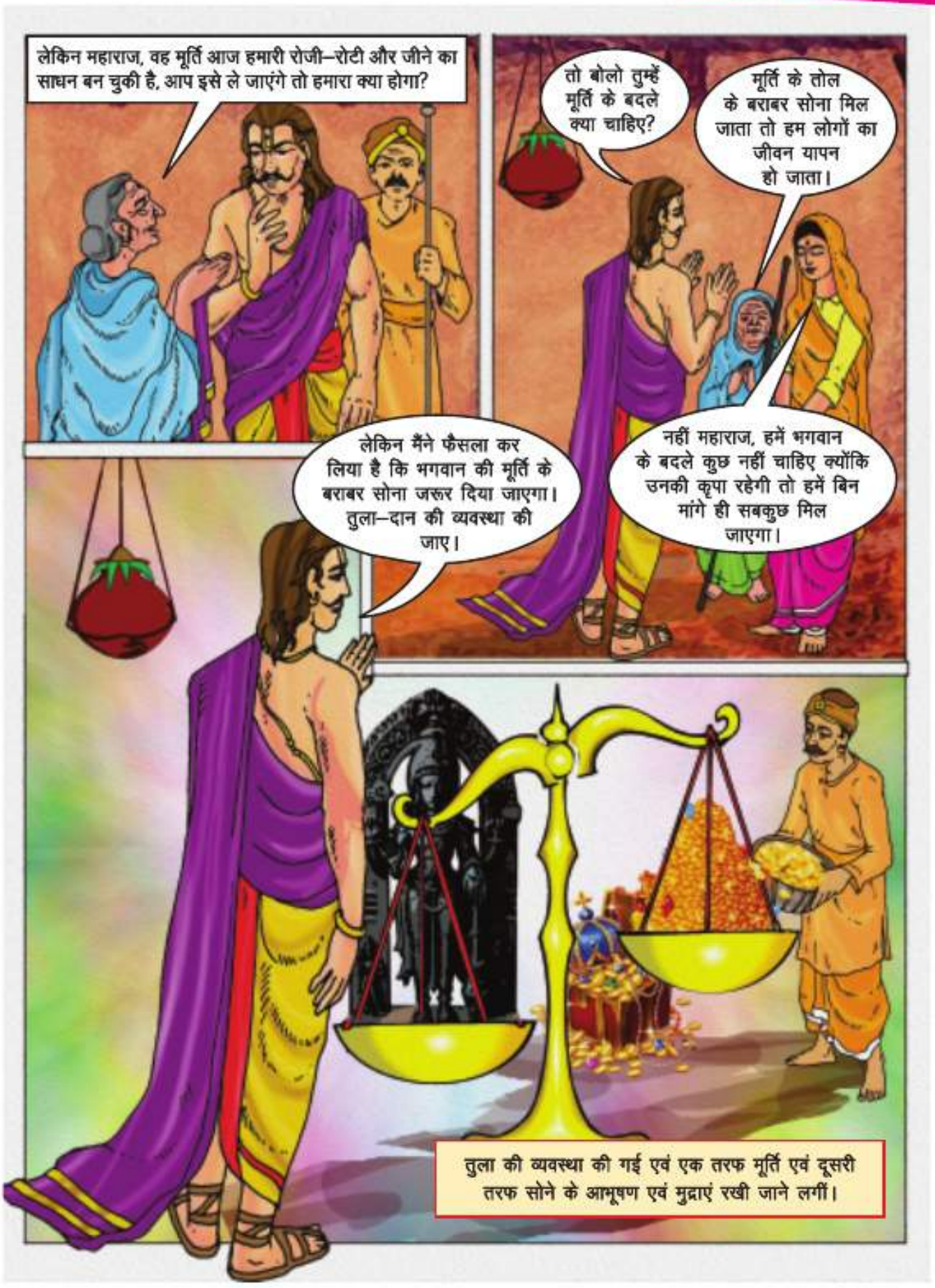
लेकिन महाराज, वह मूर्ति आज हमारी रोजी–रोटी और जीने का साधन बन चुकी है, आप इसे ले जाएंगे तो हमारा क्या होगा?
तो बोलो तुम्हें मूर्ति के बदले क्या चाहिए?
मूर्ति के तोल के बराबर सोना मिल जाता तो हम लोगों का जीवन यापन हो जाता।
नहीं महाराज, हमें भगवान के बदले कुछ नहीं चाहिए क्योंकि उनकी कृपा रहेगी तो हमें बिन मांगे ही सबकुछ मिल जाएगा।
लेकिन मैंने फैसला कर लिया है कि भगवान की मूर्ति के बराबर सोना जरूर दिया जाएगा। तुला–दान की व्यवस्था की जाए।
तुला की व्यवस्था की गई एवं एक तरफ मूर्ति एवं दूसरी तरफ सोने के आभूषण एवं मुद्राएं रखी जाने लगीं।

पर्याप्त सोना रखने के बाद भी तुला का मूर्ति वाला भाग नहीं उठा।
जाओ, और राजमहल में रखे सोने की सभी वस्तुओं को लाकर तुला में रखो।
जो आज्ञा महाराज!
महाराज, राजकोष एवं राजमहल के सोने से बनी सारी मुद्राएं, आभूषण और बर्तन लाए जा चुके हैं लेकिन तुला है कि टस से मस नहीं हो रही है। इसमें जरूर कोई रहस्य है।
राजिम अब तुम ही कोई युक्ति सुझाओ।
राजिम ने तुलसी की पत्ती लाकर तुला में रखी और तुला बराबर हो गई।
राजिम तुम्हारी भक्ति महान है, हम प्रसन्न हुए। आज से ये नगरी राजिम के नाम से जानी जाएगी और मंदिर राजीव–लोचन कहलाएगा।
इस तरह राजिम मंदिर एवं राजिम नगर का नामकरण हुआ। मंदिरों से सज्जित पुण्य स्थली राजिम आज भी छत्तीसगढ़ के जन–जन की आस्था का केन्द्र है।
समाप्त

नेकी के पथ पर

शारदा लाल

अरे छोटू एक गरमा गरम चाय तीन नम्बर टेबल पर जल्दी से पहुँचा तो।

छोटू लपकता हुआ काउन्टर पर आया और फुर्ती से तीन नम्बर की मेज पर चाय पहुँचा दी।

शंकर भाई की यह चाय की दुकान चार वर्षों से इस कोने को गुलजार किये हुए है। 16-17 की उम्र की यह लड़के दौड़ दौड़ कर लोगों को चाय पहुँचाते। सुबह से शाम तक यह कोना गुलजार रहता। पिछले छः माह से छोटू नाम का लड़का भी यहाँ काम कर रहा है। 16 की वय वाला यह लड़का ग़ज़ब का फुर्तीला है। शंकर भाई इसे दिन में कई बार शाबाशी देते। अब तो दुकान के पीछे एक छोटी सी कोठरी में सोने की जगह भी दे दी है। छोटू के दिन चैन से कट रहे थे। गाँव छोड़ कर आया छोटू दिन में डट कर काम करता और रात में पाँव पसार कर बेखबर सोता, पर उसके साथियों को उसका यह चैन बेचैन किये था। शंकर भाई छोटू का इतना ख्याल रखते हैं, यह बात भी उसके साथियों को परेशान कर रही थी। छोटू के दूसरे साथी हमेशा इस ताक में रहते कि कैसे छोटू को डाट पड़े, पर ऐसा हो नहीं पा रहा था। अपने इन साथियों का सामना करने के लिए छोटू की काम के प्रति लगन और ईमानदारी ढाल बन कर सबके सामने खड़ी थी।

एक दिन चाय की इस दुकान के

सभी लड़कों की कुमंत्रणा सफल हो गयी। शंकर भाई से छोटू के साथी जब तब उसकी शिकायत तो करते ही रहते थे।

एक दिन एक लड़के ने शंकर से कहा 'भाई जी, यह चोरी कर करके अपनी पेटी में पैसे रखता रहता है। रोज काम पर आने से पहले यह अपनी खोली का दरवाजा बन्द कर पेटी को खोलता है। कुछ थैलियां निकालता है। जरूर उनमें इसके चोरी के पैसे होंगे।' एक बार, दो बार, बार-बार छोटू की शिकायत मिलने पर, शंकर को कुछ सोचने पर मजबूर कर दिया -

शंकर भाई ने एक दिन सवेरे-सवेरे छोटू की खोली का दरवाजा जोर से भड़भड़ाया। घबरा कर छोटू दरवाजे की तरफ भागा। उसने देखा शंकर भाई खड़े हैं और वह भी आँख लाल-पीली किये हुए। छोटू उनकी मुद्रा देखकर थरथर कांपने लगा।

तभी शंकर भाई की आवाज कड़की - 'दिखा, कहाँ रखे हैं तूने पैसे चुरा कर, कब से तू यह चोरी कर रहा है। शंकर भाई ने लपक कर उसकी पेटी झपट ली, खोल इसे' - वे जोर से दहाड़े।

छोटू घबरा कर रोने लगा। अपने पैजामे के नारे में बंधी हुई एक पुरानी चाभी खोलते हुए छोटू ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, भाई जी मैंने कोई चोरी नहीं की। शंकर भाई की आवाज फिर कड़की, 'तू जल्दी से पेटी खोल।'

छोटू ने कांपते हाथों से पेटी का ढक्कन खोल दिया। टीन का ढक्कन खड़खड़ा कर चुप हो गया।

शंकर ने कहा इन पोटलियों को खोल। छोटू के कांपते हाथों ने एक पोटली खोली तो उसमें ढेर सारे कंचे झिलमिला उठे। एक पुराने कपड़े को हटाया तो एक गुलेल निकली, और अन्तिम पैकेट में एक जोड़ी पुरानी घिसी हुई चप्पल मिली। शंकर यह सारा सामान देखकर सकपका गया। इन्हीं चीजों को देखने के लिए तू रोज पेटी खोलता है।

हाँ भाई, जब मैं घर से चला था, तन पर पुराने कपड़ों के अलावा यह पेटी भी मेरे साथ थी। मेरी माँ ने बड़ी जतन से मेरी पेटी

में सारा सामान रखा था। शंकर फिर गरजा मगर क्यों रखा था यह उटपटांग सामान।

भाई जी, मां ने कहा था बचपन में तू जिस चतुराई से कंचे खेलता और जीतता था उतनी ही कुशलता से तू अपना काम भी करेगा। जैसे तू गुलेल से निशाना साधता था उसी तरह तेरी नज़रे सिर्फ काम पर ही रहेगी। यह टूटी चप्पल जिसे मैंने संभाल कर रखी है, यह माँ ने चलते समय मुझे दी थी। यह मेरे पिताजी की है। माँ ने कहा था, तू इन्हें रोज देखेगा और याद रखेगा कि पूरी उम्र तेरे पिता जी ने ईमानदारी के लिए ही कदम उठाया। तेरे कदम कभी डगमगायें नहीं, इसलिए काम पर जाने से पहले, रोज इन चीजों को देखेगा।'

शंकर छोटू के सामने बौना हो गया था। उसकी जबान तालू से चिपक गयी थी। जिन्दगी का इतना बड़ा फलसफा छोटू अपनी लरजती आवाज में शंकर भाई को समझा गया था।

खोली से बाहर निकलते-निकलते शंकर ने छोटू से कहा 'कल से तू मेरी जगह पर यानि काउन्टर पर बैठेगा। शंकर छोटू से नजरें बचाता हुआ खोली के बाहर निकल गया।'

- 499/183, जी.एन. मिश्रा रोड, डालीगंज, लखनऊ-226020 मोबाइल : 9935638020

कविता

बुगली रानी

नेहा वैद

लगा लिया जो 'बुगली' ने
दादी का ऐनक
छोटी-सी इक टॉफी
कितनी बड़ी हो गई।
कैसे मुँह में डाल इसे अब
खाएगी वो
इसी सोच में 'बुगली' रानी
खड़ी रह गई।।

क्लासिक ए-7, 102, जे.पी. ग्रीन विश, सेक्टर-134,
नोएडा (गाजियाबाद) उत्तर प्रदेश
मोबाइल : 9769992656

बारिश-बारिश खेलें

डॉ. रामकठिन सिंह

आओ बारिश-बारिश खेलें, मित्र-मण्डली को संग ले लें
गोलू, मोलू छत पर चढ़कर, जल से भरे हजारे लेकर
जल की बूँद गिराएँ भू पर, बादल ज्यों बरसे हैं झर-झर
कैसा है मौसम बारिश का, उसका एक जायजा ले लें...

नाचें, गायें, धूम मचाएँ, बारिश में हम खूब नहाएँ
बादल मामा के गुन गाएँ, ऐसे वे भी जल बरसाएँ
क्षण भर के ही लिए सही, पर हम बादल मामा-सा हो लें...

एक बूँद भी व्यर्थ न जाए, संचय करें बनाकर पोखर
धरती माँ का हृदय जुड़ाए, दें आशीष हमें खुश होकर
एक साथ सब मिलकर साथी, धरती माता की जय बोलें...

पोखर जब जल से भर जाए, हम कागज की नाव चलाएँ
मम्मी, पापा से जाकर हम, 'रेनी-डे' की खबर सुनाएँ
सुनकर पापा हँसे ठठाकर, मम्मी जी भी होले, होले
आओ बारिश-बारिश खेलें, मित्र-मण्डली को संग ले लें।

1, देवलोक कॉलोनी, चर्च रोड, विष्णुपुरी,
अलीगंज, लखनऊ-226024

लहर-लहर लहराता झण्डा

रमाकांत मिश्र 'स्वतंत्र'

हमको भारत देश हमारा,
लगता कितना प्यारा है।
लहर-लहर लहराता झण्डा,
इस पर तन-मन वारा है।।

भारत माँ के दीवानों की
लगती अजब कहानी है।
माँ की रक्षा करने में ही,
इनकी कटी जवानी है,
चमके सुहाग आजादी का
माँ का इनके द्वारा है।
हमको भारत देश हमारा
लगता कितना प्यारा है।।

होकर सीमा पर चौकन्ने
पहरा पल-पल ये देते,
पलक झपकते ही दुश्मन के
प्राणों को भी हर लेते,
भारत के नभ में इनसे ही
चमके अमन-सितारा है।
हमको भारत देश हमारा
लगता कितना प्यारा है।।

हमको भारत देश हमारा,
लगता कितना प्यारा है।।
बड़े काम जांबाज हिन्द के
रात और दिन आते हैं,
रौनक ही रौनक चेहरे पर
इसके ये ही लाते हैं,
हिन्दुस्तान इन्हीं के बल पर
दमके न्यारा - न्यारा है।
हमको भारत देश हमारा
लगता कितना प्यारा है।।

किसान भी अपने खेतों में,
अनाज पैदा करते हैं,
हम सबके हीरा-मोती हैं
हम सब इन पर मरते हैं।
भूख मिटे इनके ही बल पर
इनसे बड़ा सहारा है।
हमको भारत देश हमारा
लगता कितना प्यारा है।।

बली बनाते श्रमिक देश को
कल-पुर्जों से नित लड़कर,
लोहा-सा तपकर भट्टी में
पैने हो जाते गलकर,
ऐसा इनसे हिंद दमकता
जैसा दमके तारा है।।
हमको भारत देश हमारा
लगता कितना प्यारा है।

महक रही श्रम के सुमनों से
क्यारी भी ऊसर वाली,
खिले यही हैं फूल देश में
हम सब इनके हैं माली,
ऐसे श्रम रूपी कुसुमों से
महके देश हमारा है।
हमको भारत देश हमारा
लगता कितना प्यारा है।।

- 12, दयाल एन्क्लेव, सेक्टर-9, इंदिरा नगर, लखनऊ-226016 मोबाइल : 9839608782

आजादी है सबको प्यारी

डॉ. मधु प्रधान

छोटी सी प्यारी सी गुड़िया
एक दिन उसने पकड़ी चिड़िया
सुंदर सा पिंजड़ा मँगवाया
झालर से उसको सजवाया
मखमल का गद्दा बनवा कर
चिड़िया को उस पर बिठलाया
बोली अब तुम गाना गाओ
चूं चूं कर मुझको बतलाओ
जो चाहोगी वह ला दूँगी
या पापा से मंगवा दूँगी
चिड़िया आँसू भर कर बोली
सुनना चाहो मेरी बोली
पिजड़े का तुम द्वार हटाओ
मुझको आजादी दिलवाओ
रोज सवेरे में आऊंगी
तुमको गीत सुना जाऊंगी
सबसे अच्छी सबसे न्यारी
आजादी है सबको प्यारी।

- 3ए/58-ए, आजाद नगर, कानपुर-208002 मोबाइल : 9236017666

माँ आखिर माँ होती है

नयन कुमार राठी

माँ आखिर माँ होती है,
ममता की मूरत होती है!
इनमें लक्ष्मी, इनमें सरस्वती
सीता की सूरत होती है!
माँ आखिर माँ होती है!
ममता रूपी धन ये तो लुटाए,
जितना लुटाए, बढ़ता ही जाए,
कभी खतम नहीं होने पाए!
ममता की फसल ये तो बोती है!
माँ आखिर माँ होती है!
इनके प्यार को कोई तौल नहीं पाए,
घर तो क्या बाजार में मोल नहीं पाए,
क्या और कितने राज हैं दिल में,
कोई खोल नहीं पाए,
राज की ये बंद पोथी होती है!
माँ आखिर माँ होती है!
इनकी नजर में बड़ा भी बच्चा है,
जो भी कहे-सुने-देखे वह अच्छा है!
प्यार इनका इतना सच्चा है!
प्यार के मोती, माला में पिरोती है!
माँ आखिर माँ होती है!
क्या-क्या दर्द ये सहती है
पर मुँह से कुछ नहीं कहती है,
नदी की तरह यह तो बहती है!
दर्द सहने की इनमें शक्ति होती है!
माँ आखिर माँ होती है!
हम माँ की महिमा समझ कहाँ पाते हैं,
जिसने हमें जनम दिया,
उसी को बेरहमी से ठुकराते हैं,
बेसहारा कहीं छोड़ आते हैं!
हम तो खुश होते हैं,
पर अँसुअन से वह तो,
नयन भिगोती है - नयन भिगोती है...
नयन भिगोती है!
माँ आखिर माँ होती है!

- 64, उदापुरा (नरसिंह बाजार के पास) इंदौर-452002 (मध्य प्रदेश)

कागज का निर्माण

अलका प्रमोद

बच्चो! तुम तो जानते ही हो कि कागज हमारे लिये कितना महत्वपूर्ण है। हमारी किताबें, कापियाँ कागज की ही तो बनती हैं। कागज पर ही हम चित्र बनाते हैं उसमें रंग भरते हैं। कभी-कभी जब पानी बरसता है तो हम कागज की नाव बनाते हैं तथा खेलते समय कागज का रॉकेट बनाते हैं। दफ्ती भी कागज का ही एक रूप है, कागज और दफ्ती पैकिंग के काम आता है। कागज के लिफाफे बनते हैं चिट्ठी लिखी जाती है। क्या तुम्हें पता है कि कागज बनता कैसे है?

चलो इस बारे में हम तुम्हें बताते हैं। कागज अधिकतर पेड़, कॉटन और अन्य फाइबर से बनाया जाता है। अधिकांशतः कागज लकड़ी से ही बनता है पर अधिक उच्च या विशेष प्रकार कागज काटन से बनता है जैसे नोट का कागज आदि।

प्राचीन काल में कागज हाथ से बनाये जाते थे कुछ कलात्मक कागज आज भी हाथ से ही बनते हैं पर अधिकांशतः मशीन से ही बनते हैं।

कागज बनाने वाली सामग्रियों में पाये जाने वाले सेलुलोस या हेमी सेलुलोस नामक पदार्थ से कागज बनता है जो आपस में जाल बना सकें। यद्यपि इस पदार्थ में आवश्यकतानुसार ऐसे पदार्थ मिलाये भी जाते हैं जो उसे जोड़े रखने में मदद करते हैं। कागज के लिए काटन या लिनेन कपड़े के चिथड़ों का प्रयोग भी होता है। कपास के छोटे रोयें जिनसे कपास नहीं बन सकता उन्हें भी कागज बनाने में प्रयोग किया जाता है। कागज बनाने में कुल फिलर मिलाये जाते हैं जैसे मिट्टी, कैल्शियम कार्बोनेट तथा टाइटेनियम डाई आक्साइड। इन पदार्थों को मिलाने का लाभ यह होता है कि कागज अपारदर्शी हो जाता है। कागज का अपारदर्शी होना आवश्यक होता है क्योंकि यदि कागज पारदर्शी होगा तो उस पर कुछ लिखने पर दूसरी ओर से दिखायी देगा। अतः यदि कागज मोड़ भी दिया जाए तो उस पर क्या लिखा है वह दिखेगा तथा कागज का एक ही ओर उपयोग किया जा सकेगा। सबसे बड़ी बात है कि पारदर्शी कागज पर लिखा हुआ स्पष्ट नहीं होगा। कहने का अर्थ यह है कि कागज को अपारदर्शी होना आवश्यक है जिससे एक ओर कुछ लिखा या छापा जाय तो वह दूसरी ओर न

दिखायी दे और स्पष्ट भी दिखायी दे। कागज को गला कर पुनः इससे कागज बनाया जा सकता है। अधिकतर कागज से पुनः बनाये गये कागज से टिशू पेपर, पेपर टावेल, नैपकिन आदि बनाये जाते हैं।

हाथ से कागज बनाने में लकड़ी कपड़े आदि से फाइबर प्राप्त करने के लिये सेलुलोज या हेमी सेलुलोज को अलग किया जाता है फिर इसे पीट-पीट कर इसका गूदा बनाते हैं। गूदे में आवश्यकता के अनुसार रसायन और रंग मिलाये जाते हैं। गूदे के विभिन्न प्रकारों के द्वारा विभिन्न प्रकार के कागज और गत्ते बनते हैं। कागज बनाने के लिये बनाये गये गूदे को स्टील या अन्य धातु की लकड़ी के फ्रेम में बनी जाली से छाना जाता है। इस जाली को मोल्ड कहते हैं तथा इसके आकार के अनुसार ही मोल्ड से कागज बनकर तैयार होता है। जो गूदा छन कर मोल्ड के आकार का निकलता है उसे हाइड्रॉलिक प्रेस से दबाकर सुखाया जाता है। हाथों से बनाया गया कागज थोड़ा खुरदुरा बनता है और बहुत अधिक मात्रा में बनना संभव नहीं होता। हाथ से बना कागज कलात्मक माना जाता है और अधिकतर कार्ड आदि बनाने के लिये उपयोग किया जाता था। पहले कागज की एक-एक शीट अलग-अलग बनती है और उसे हवा में सुखाया जाता था। यह कागज उतना चिकना पतला और चमकदार नहीं होता। इसके अतिरिक्त हमको कागज की आवश्यकता बहुत अधिक होती है। इतनी मात्रा में हाथ से कागज बनना संभव नहीं होता है। अतः मुख्यतः कागज मशीन से ही बनता है।

सर्वप्रथम 1806 में हेनरी एवं सीलरी फाउड्रिन्यर द्वारा कागज बनाने की मशीन बनायी गयी थी। आज भी कागज बनाने की मशीन 'फाउड्रिन्यर मशीन' के सिद्धान्त पर ही कार्य करती हैं।

कागज बनाने की प्रक्रिया कई भागों में बँटी होती है। पहले चरण को फार्मिंग सेक्शन कहते हैं। इस भाग में कागज बनाने के लिये मुख्यतः पेड़ की लकड़ी एवं छाल का ऐसा फाइबर प्राप्त किया जाता है जिसमें एक दूसरे के साथ जाल बनाने का गुण हो। कागज बनाने के लिये फाइबर को मशीन की सहायता से बहुत महीन गूदे में बदलते हैं फिर उसमें आवश्यक रसायन मिलाते हैं। इसे एक चेस्ट में डालते हैं जो सिलेन्डर आकार या आयताकार आकार का होता है इसमें गूदे को भलीभांति मिलाया जाता है। गूदे को मशीन से छाना जाता है। इसे छानने के लिए एक जाली लगातार घूमती रहती है। अतः जब गूदा उसमें डाला जाता है तो उसका पानी छन जाता है। पम्प से उसे दूसरे चेस्ट में भेजा जाता है। इसे पतला किया जाता है तथा फिर दो डिस्क के बीच में दबाया जाता है जिससे विभिन्न मोटाइयों के फाइबर बनते हैं। इसमें दो डिस्क में से एक स्थिर रहती है तथा दूसरी डिस्क

उस पर रखे गूदे को दबाकर जैसा कागज बनना है उसके अनुसार दबाव डालती है और उसी के अनुसार गुण का फाइबर बनता है। चेस्ट में गूदा पम्प किया जाता है। यह गूदा पहले ब्लेंड चेस्ट में भेजते हैं फिर मशीन चेस्ट में।

इसके बाद गूदा 'प्रेस सेक्शन' में भेजा जाता है। प्रेस कई तरह के होते हैं एक में एक ओर से चिकना तथा दूसरी ओर से थोड़ा खुरदुरा कागज बनता है एक डबल प्रेस होता है उससे दोनों ओर से चिकना कागज बनता है।

इसके बाद उस दबाये गये गूदे को 'ड्रायर सेक्शन' में सुखाने के लिये भेजा जाता है। तत्पश्चात बने कागज को चिकना और मजबूत बनाने के लिये उसे 'साइजर सेक्शन' में भेजते हैं जहाँ उस पर रेसिन गोंद, स्टार्च आदि लगाते हैं।

अब कागज को 'कैलेण्डर सेक्शन' में भेजा जाता है, जहाँ रोलर होते हैं जिनसे कागज को अधिक दबाव देकर चमकदार और चिकना बनाया जाता है।

तत्पश्चात् कागज को 'रील सेक्शन' में एक सिलेण्डर पर लपेटा जाता है। इसमें एक धातु की रॉड होती है जिस पर एक और सिलेण्डर होता है। इस पर कागज को लपेट कर रोल बनाया जाता है।

अंत में इन कागज के रोल को 'वाइण्डर सेक्शन' में भेजा जाता है। यहाँ ग्राहक की आवश्यकता अनुसार रोल को छोटा बड़ा आकार दिया जाता है।

इस प्रकार कागज बनकर तैयार होता है। कागज पेड़ की छाल, लकड़ी आदि से बनता है तो इसके लिये स्वाभाविक है कि पेड़ काटने की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि संसार की बढ़ती आबादी और कागज की इतनी अधिक माँग को देखते हुए बहुत पेड़ काटने पड़ेंगे। पेड़ काटना पर्यावरण के लिये हानिकारक होता है क्योंकि पेड़ काटने से प्रदूषण और अधिक बढ़ेगा। पेड़-पौधे ही तो वायु को स्वच्छ करने में सहायक होते हैं। यही कारण है कि अब कागज का प्रयोग कम करने का प्रयास किया जा रहा है। इसीलिये आज अधिक से अधिक कार्य इलेक्ट्रानिक माध्यम से करने को बढ़ावा दिया जा रहा है।

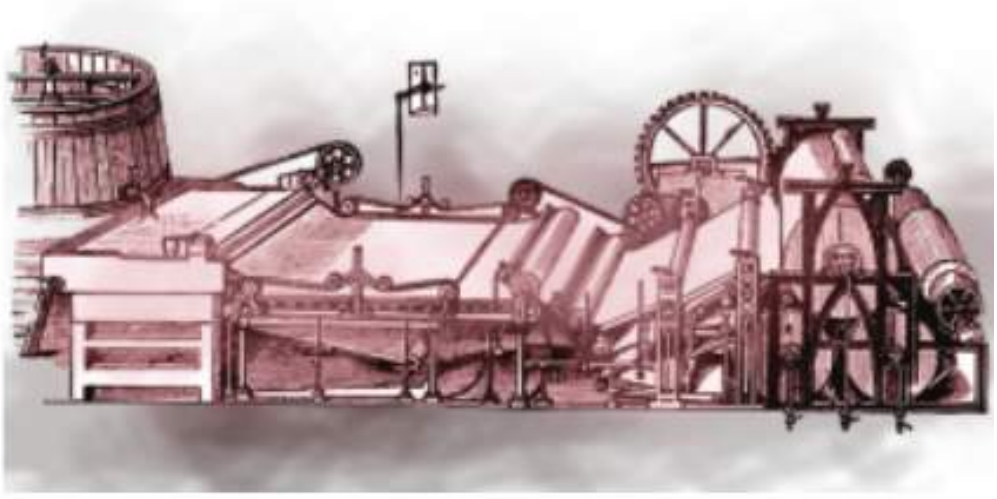

- 5/41, विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 मोबाइल : 09839022552

विश्व जनसंख्या दिवस

सुधा तैलंग

11 जुलाई को एक बार हम फिर से विश्व जनसंख्या दिवस मनाने जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 11जुलाई 1968 को विश्व जनसंख्या दिवस मनाने की शुरूआत इसी अवधारणा के साथ की गई थी ताकि जनसंख्या के आंकड़ों के लेखा-जोखा के संग, जनसंख्या नीति का निर्धारण भी किया जा सके। विश्व जनसंख्या दिवस मनाते हुए आज हमें पूरे इक्यावन वर्ष होने जा रहे हैं। इसके बावजूद समूचे विश्व की आबादी तेजी से बढ़ती जा रही है।

ब्रिटिश इंडिया में पहली जनगणना सन् 1872 में की गई थी. इसको देखते हुए 2011 की जनगणना अब तक की 15 वीं व आजादी के बाद की सातवीं जनगणना कही जा सकती है। सन् 1951 में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद के कार्यकाल में प्रथम जनगणना हुई थी। 10 वर्षों के अन्तराल में भारत सरकार के गृह मत्रांलय, रजिस्ट्रार जनरल व जनगणना आयुक्त द्वारा जनगणना का कार्य किया जाता हैं। अब 2021में जनगणना होगी।

एक दशक के बाद की जनगणना से ही देश की स्थिति, उन्नति और विकास का पता चलता है। साथ ही बढ़ती आबादी जनसंख्या को कैसे रोका जाएं, साक्षरता दर कैसे बढ़ाई जाए, सामाजिक-आर्थिक विकास को सही दिशा कैसे दी जाए? जनगणना के आंकड़ों को देखकर ही पंचवर्षीय योजनाओं का प्रारूप तैयार किया जाता है।

जनसंख्या के आंकड़ों पर गौर किया जाये तो आजादी के बाद सन् 1951 में भारत की जनसंख्या मात्र 36.1 करोड़ थी, लेकिन 2018 के अनुमानित आंकड़ों के आधार पर आज यही जनसंख्या 135 करोड़ का आंकड़ा पार कर चुकी हैं। हमारे देश में जनसंख्या की वृद्धि के ये ताजा आंकड़े निश्चित ही हमारे सामने बहुत बड़ी चुनौती हैं। 2021 में आबादी का ये ही आंकड़ा 138 करोड़ से भी ज्यादा अपेक्षित अनुमानित किया जा रहा है।

बढ़ती आबादी आज विश्व की एक गंभीर समस्या बन चुकी है. संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार अगले डेढ़ दशक में जनसंख्या के मामले में भारत चीन को भी पीछे छोड़ देगा। सन् 2028 में भारत व चीन की जनसंख्या 1 अरब 45 करोड़ के आस-पास रहेगी। चूंकि चीन पिछले कई दशकों से जनसंख्या नीति पर सख्त नियंत्रण बनाए हुए हैं। ऐसे में वहां की जनसंख्या में गिरावट आ सकती है।

डब्ल्यू. एच. ओ. की रिपोर्ट के अनुसार यदि भारत में शिशु जन्म दर ऐसी रही तो 15 साल में चीन से ज्यादा हो जायेगी हमारी आबादी । वर्ल्ड पापुलेशन प्रास्पेक्ट्स की एक रिपोर्ट के अनुसार इस शताब्दी के अन्त तक भारत की जनसंख्या 1 अरब 54 करोड़ तक पहुंचने की संभावना है। ये आंकड़े निश्चित ही बेहद चिंताजनक स्थिति दर्शाने वाले कहे जा सकते हैं।

2011 की जनगणना के अनुसार देश के 74 प्रतिशत लोग साक्षर हैं. पुरुषों के मुकाबले महिला साक्षरता दर में बढ़ोतरी दर्ज हुई हैं। सबसे साक्षर राज्य केरल की साक्षरता दर 93.9 होने के अलावा केरल में लिंगानुपात भी सबसे ज्यादा 1084 है। बेटी बचाओ मुहिम से देश के 104 जिलों में लिंगानुपात में बढ़ोतरी हुई है।

भारत दुनिया का सबसे युवा देश है। यहां की करीब सत्रह करोड़ जनसंख्या 13 से 19 साल की है। 18 से 21वर्ष के आठ करोड़ युवा हैं। 2001 में 1.30करोड़ बच्चे जन्मे थे वे 2019 में 18 साल के हो जायेंगे। भारत में महिलाओं की कुल जनसंख्या 48.18 है। अगले दस सालों में भारत की तस्वीर बदल जायेगी। भारत की 15 फीसदी आबादी 2025 तक 60 साल की उम्र को पार कर जायेगी। भारत में सबसे ज्यादा बदलाव 15 से 59 साल आयुवर्ग की आबादी पर पड़ने वाला है। इतनी बड़ी आबादी के लिये समय रहते योजनायें तैयार करना एक कड़ी चुनौती है। ऐसे में अगर आबादी को बेहतर स्वास्थ्य सुविधायें, रोजगार व शिक्षा नहीं मिली तो देश के बुनियादी ढांचे पर असर पड़ सकता है।

जनगणना के आंकड़ों के अनुसार एक सकारात्मक पहलू ये भी कहा जा सकता है कि भारत में

54 प्रतिशत से अधिक युवा हैं, जो देश को आर्थिक महाशक्ति प्रदान कर सकते हैं। देश की युवाशक्ति राष्ट्र के लिए एक जन-सांख्यिक बोनस की तरह है, जो मानवीय पूंजी और विकास उर्जा का स्रोत हैं। क्योंकि युवा अपनी कार्यक्षमता से देश के विकास की नई राह गढ़ सकता हैं युवा भारत सशक्त भारत सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, औद्योगिक व कला के क्षेत्र में अपनी कुशलता का परचम फहराते हुये विश्व में सकारात्मक बदलाव ला सकता है।

एक रिपोर्ट के अनुसार सरकार की बेटी बचाओ बेटी पढाओ योजना के परिणाम बेहतर आ रहे हैं। आज शासन द्वारा बेटियों के हित में लाडली लक्ष्मी योजना, बेटी बचाओ अभियान के साथ-अनेक कल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही हैं। बेटियों को निःशुल्क शिक्षा के साथ अनेक प्रकार की छात्रवृतियां व अनेक सुविधाएँ दी जा रही हैं। एक सुखद पहलू ये है कि बेटियाँ आज हर क्षेत्र में आगे हैं।

देश की जनसंख्या 135 करोड़ तक पहुंचना हमारे लिए एक बहुत बड़ी चुनौती हैं। ऐसे में जनगणना के ये आंकड़े हमारे देश व प्रदेश की एक ताजा तस्वीर बयां करते हैं। क्योंकि जनगणना से ही लिंगानुपात, निशक्तता, शिक्षा, सामाजिक, आर्थिक स्थिति, कृषि के अलावा आबादी के प्रत्येक हिस्से में राष्ट्रीय, शहरी,ग्रमीण विकास की सरकारी योजनाओं के लाभ का आकलन किया जा सकता है। जनगणना से समूचे देश के विकास की सही स्थिति का पता चलता है।

जनसंख्या दिवस मनाने की सार्थकता तभी सिद्ध हो सकती हैं। जब पल्स पोलियो, स्वच्छता अभियान की तरह बढ़ती आबादी पर हम सब चिंतन करें। सामान्य जन के अलावा नेता, अभिनेता, खिलाड़ी इस मुहिम से जुड़ें। इस जनगणना दिवस में हम सीख लें। ताकि एक स्वस्थ, सबल, सशक्त व विकसित प्रदेश व देश का निर्माण किया जा सके।

- सिमरन अपार्टमेन्ट, प्लाट न. 16- 17, ई-8 त्रिलंगा, भोपाल-462001 मोबाइल : 9301468578

मुझसे भी बढ़कर

संदीप सक्सेना

एक बार की बात है, एक था बेहद बड़ा सा घड़ा। बहुत ही सुंदर व चिकना-चुपड़ा था वह। सख्त गर्मी के दिन थे, जो कोई भी उस घड़े के शीतल जल को पीता, वह भीतर तक तृप्त हो जाता था, और उसके मुख से प्रशंसा-स्वरूप 'वाह' निकल जाती थी। पसीने से तर-बतर शरीर और सूखते गले में उस घड़े का शीतल जल अमृत के समान काम करता था, और उसको ग्रहण करने वाला कोई भी व्यक्ति बिना उसकी तारीफ किये रह नहीं पाता था। हर तरफ से मिलती वाह-वाही, प्रशंसा और खुले दिल की तारीफों ने घड़े पर गलत असर डाला, उसके अंदर बहुत अधिक घमंड भर गया और वह सोचने लगा था कि मैं तो बहुत बड़ा व महान काम करता हूँ, प्यासे लोगों की प्यास बुझा उन्हें नवजीवन प्रदान करता हूँ, इससे अच्छा व श्रेष्ठ काम तो दुनिया में और कोई हो ही नहीं सकता। अब चूंकि मैं यह काम करता हूँ, मेरे द्वारा ही यह सम्भव हो पाता है, सो मैं दुनिया में सर्वश्रेष्ठ, सबसे बड़ा व सबसे महान हूँ, मेरे बराबर तो कोई हो ही नहीं सकता कभी। वह इस विषय में जितना अधिक सोचता जाता, उसका घमंड भाव उतना ही प्रबल होता जाता था। अपनी तारीफ को सुन-सुन कर वह फूल कर कुप्पा हो जाता था। घमंड ने एक तरह से उसके सोचने-समझने की सारी शक्ति को ही खत्म करके रख दिया था। अपने सामने की हर चीज उसे बेहद ही तुच्छ, हीन व छोटी-सी नजर आती थी। वह सबको हेय दृष्टि से देखने लगा था। जब चाहे किसी का भी अपमान कर देता था - मजाक उड़ा देता था, और अपनी इस हरकत पर वह रत्ती भर भी शर्मिन्दा न होता था।

धीरे-धीरे समय बीतता गया, मौसम बदला-स्थितियों में परिवर्तन आया, गर्मी समाप्त हो गई और मौसम में ठंडापन आने लगा। ऐसे परिवर्तन ने घड़े के पानी के प्रयोग को धीरे-धीरे कम करना प्रारंभ कर दिया। और फिर, जैसे-जैसे ठंड का प्रकोप बढ़ा . . . घड़े का प्रयोग बिल्कुल बंद हो गया था। अब घड़े की ओर कोई दृष्टि भी नहीं डालता था। अपने इस हाल को देखकर घड़ा तो जैसे

आसमान से जमीन पर आ गिरा था। उसके घमंड का सारा नशा हिरन हो चुका था। घर के एक कोने में वह खाली तथा बिल्कुल उपेक्षित सा पड़ा था, कोई भी उसको पूछता तक नहीं था। अपनी इस अविश्वसनीय सी स्थिति को देखकर वह घड़ा बेहद ही दुखी तथा निराश हो गया था। इस दुर्गति की तो उसने कल्पना भी नहीं की थी कभी। वह अक्सर यही सोचा करता था कि मैं आखिर इस दशा में क्यों और कैसे आ गया? अगर मैं इस दुनिया में सर्वश्रेष्ठ, सर्वगुण सम्पन्न तथा सबसे बड़ा था तो फिर मेरी यह दुर्दशा कैसे हो गई – क्यों नहीं रोक पाया मैं अपनी इस गिरती हुई हालत को, हमेशा की तरह मैं अपने आप को क्यों नहीं बना रख सका..? जितना वह इस विषय में सोचता उसको अपनी गलती का अहसास होने लगता था। निस्संदेह ही मुझसे भी बढ़ कर मुझसे श्रेष्ठ व मेरे से ऊपर कोई शक्ति है जो सबको संचालित करती है, ज्ञान की इस चमक ने उसके अंदर के अंधकार को हटना शुरू कर दिया था। मुझे घमंड नहीं करना चाहिए था, आखिर मुझसे भी बड़ा है कोई दुनिया में जो कि मुझे और सबको चलाता है। उसी ने मुझे कुछ गुण व खूबियां प्रदान कीं – और मैं बेवकूफ – अज्ञानी घमंड के सर्वथा गलत भाव को जन्म दे बैठा, जितना भी वह इस विषय में सोचता, उसकी शर्मिंदगी बढ़ने लगती थी। घर के एक कोने में सबकी नजरों से दूर व उपेक्षित पड़ा, धूल और मिट्टी में सना वह अपनी दुर्दशा पर आंसू बहाता रहता था। सोचा था कि मैंने जो गलती की है, उसकी सजा तो भुगतनी ही पड़ेगी। यह सजा ही मेरे लिये मेरे द्वारा किये गए पाप का प्रायश्चित है।

समय अपनी गति से बीतता गया, बरसात और जाड़े का मौसम आया और फिर चला गया, और फिर से आ गया गर्मी का मौसम। गर्मी का बढ़ना था कि सबकी निगाह उस घड़े पर गईं। घड़े को साफ किया गया था। घड़े को पहले की तरह ही फिर से वाहवाही मिलने लगी थी। पर घड़ा...

अब काफी बदल चुका था, मुझसे भी बढ़ कर इस दुनिया में सर्वशक्तिमान है कोई, इस बात को उसने अच्छी तरह से समझ लिया था। अपनी प्रशंसा व वाहवाही को वह विनम्रता से सिर झुकाए सुनता रहा करता था, उसे बड़ा अच्छा व सुखद अहसास होता था, पर वह अब घमंड के भाव से कोसों दूर था वह। सर्वशक्तिमान ईश्वर को याद कर वह उन्हें लाख-लाख धन्यवाद दे रहा था जिसने कि उसे एक महान गुण प्रदान कर सेवा करने का अवसर जो दिया था।

- 72, नारायण नगर, राम सागर मिश्र नगर,
लखनऊ-226016 मोबाइल : 9415902732

कच्चे धागे का बन्धन

योगेश चन्द्र शर्मा

देवता और राक्षसों के बीच युद्ध चल रहा था। देवताओं की स्थिति कमजोर होती चली जा रही थी। पराजय के लक्षण स्पष्ट थे। उन्होंने अपने गुरु वशिष्ठ से इस सम्बन्ध में विचार-विमर्श किया। गुरु वशिष्ठ ने निर्देश दिया कि अगले दिन इन्द्र, युद्ध भूमि में जाने से पूर्व, अपनी पत्नी इन्द्राणी से रक्षा-सूत्र बंधवाकर जाएं। इन्द्र ने ऐसा ही किया। इन्द्राणी ने पूर्ण निष्ठा और विश्वास के साथ कच्चे धागे से बना रक्षा-सूत्र इन्द्र की कलाई में बांध दिया और इन्द्र युद्ध-भूमि की तरफ चल दिए। परिणाम आश्चर्यजनक रहा। युद्ध का पासा पलट गया और देवता विजयी हुए। आत्मरक्षा, दृढ़ता और विजय प्राप्ति के लिए किसी उपयुक्त पात्र से रक्षा-सूत्र बंधवाने की परंपरा इस घटना से पहले भी थी किन्तु अब वह और भी अधिक दृढ़ गई।

मध्यकाल तक आते-आते रक्षा-सूत्र का कच्चा धागा, रक्षाबंधन कहलाने लगा और इसका दायरा सिमट कर भाई बहिन तक सीमित रह गया। मूल भावना अब भी रक्षा की ही रही और उसका दृष्टिकोण यह रहा कि जब भी कोई महिला किसी पुरुष को रक्षासूत्र भेजे तो वह पुरुष उस महिला को

अपनी बहन के रूप में स्वीकार करके, उसकी रक्षा के लिए हर संभव प्रयत्न करे।

चित्तौड़ की महारानी थी कर्मावती। उन पर आक्रमण कर दिया गुजरात के बादशाह बहादुरशाह ने। महारानी ने किले के दरवाजे बन्द करवा दिए। किला मजबूत था, सो, बहादुरशाह के लिए उसे फतह करना सरल नहीं था। मगर चित्तौड़ की सेना कब तक किले के अन्दर रह सकती थी। दुश्मन की सेना काफी बड़ी मात्रा में थी और उसकी तुलना में चित्तौड़ की सेना बहुत कम थी। बहादुरशाह अपनी सेना के साथ किले का घेरा डाले बाहर पड़ा था और नित्य ही किले में प्रवेश करने के लिए नये-नये प्रयत्न कर रहा था। ऐसी विषम स्थिति में महारानी कर्मावती के मन में प्रश्न कौंधा। क्यों न बादशाह हुमायूं को रक्षासूत्र भेजकर उनसे सहायता ली जाए? आशंका स्पष्ट थी। परदेसी और दूसरे धर्म को मानने वाला व्यक्ति क्या रक्षाबन्धन को महत्व देकर उन्हें बहन के रूप में स्वीकार करेगा? संभावना अधिक नहीं थी। फिर भी महारानी ने कच्चे धागे की शक्ति को कसौटी पर कसना उचित समझा। उन्होंने अपने एक विश्वस्त अनुचर द्वारा रक्षासूत्र, बादशाह हुमायूं के पास भेज दी और बादशाह भी उस कच्चे धागे से अप्रभावित नहीं रह सका। भारतीय संस्कृति में रक्षाबन्धन के महत्व के बारे में वह काफी कुछ सुन चुका था। सो उसने तत्काल महारानी कर्मावती को बहन के रूप में स्वीकार किया और अपनी सेना को चित्तौड़गढ़ भेजकर बहन को संकट से उबारा।

हुमायूं और कर्मावती की उपरोक्त घटना से भी पहले की एक और घटना है, जिसमें एक विदेशी महिला ने रक्षाबन्धन की शरण ली और इन कच्चे धागों ने उसे भी निराश नहीं किया। वह महिला थी यूनान की एक युवती-रेक्सोना। सिकन्दर ने जब भारत पर आक्रमण किया तो रेक्सोना उसके साथ ही यहां आयी थी। सिकन्दर के विश्वविजय के विचारों से वह सहमत नहीं थी। किन्तु जब सिकन्दर नहीं माना तो उसकी सुरक्षा की चिन्ता से ग्रस्त होकर वह भी उसके साथ ही चली आई। भारत में सम्राट पुरु का शौर्य सुविख्यात था। सिकन्दर की सेना भी उनसे आतंकित थी। इसलिए उसकी सेना भारत में आगे बढ़ना नहीं चाहती थी, किन्तु सिकन्दर की जिद के आगे वह विवश थी। इस युद्ध में सिकन्दर की पराजय की स्पष्ट आशंका थी। इन परिस्थितियों में रेक्सोना को सिकन्दर के प्राणों की रक्षा की चिन्ता सवार हुई। जिस दिन सिकन्दर की सेना ने झेलम नदी पार करके अपना पड़ाव डाला, उस दिन संयोगवश रक्षाबन्धन का ही त्योहार था। रेक्सोना ने अपने अनुचरों से इस त्योहार के बारे में जानकारी प्राप्त की और मन ही मन एक योजना बनाई। उस योजना के अनुसार उसने गुप्त रूप से सम्राट पुरु के पास अपना रक्षासूत्र भेज दिया। रक्षासूत्र के साथ उसने बहन के रूप में सम्राट पुरु से यह मांग भी की कि वे सिकन्दर के प्राणों की रक्षा करें। सम्राट पुरु धर्मसंकट में पड़ गए। किन्तु कच्चे धागे का सम्मान उन्होंने बनाए रखा। युद्ध हुआ और उसमें ऐसे अवसर आए,

जब सम्राट पुरु यदि चाहते तो सिकन्दर का आसानी से वध कर सकते थे। किन्तु उन्होंने अपनी बहन की बात रखने के लिए सिकन्दर के प्राण नहीं लिए और उसके बदले में पराजय स्वीकार कर ली।

मुगल शासन के उत्तरार्द्ध में एक बादशाह थे - शाह आलम सानी। इतिहास में तो विशेष प्रसिद्धि प्राप्त नहीं की, किन्तु रक्षाबन्धन की प्रतिष्ठा उन्होंने भी बनाए रखी। एक ब्राह्मण-महिला रामकौर को कच्चे धागे के बदले में उन्होंने अपनी बहन के रूप में स्वीकारा और अन्त तक उसे उसी रूप में सम्मानित करते रहे। रक्षाबन्धन के दिन रामकौर राजमहलों में आती और बादशाह के राखी बांधती। बदले में बादशाह उसे काफी धन दौलत देकर विदा करते।

अंतिम मुगल बादशाह मोहम्मद शाह जफर तो बड़ी शानशौकत के साथ रक्षाबन्धन का उत्सव मनाते, जिसे देखकर यह लगता ही नहीं था कि इस उत्सव का आयोजन किसी हिन्दू द्वारा नहीं, बल्कि मुसलमान द्वारा किया जा रहा है। शाह आलम सानी को राखी बांधे वाली एक ही हिन्दू महिला थी, जबकि जफर को राखी बांधने वाली हिन्दू महिलाओं की संख्या काफी अधिक थी।

- 10/611, मानसरोवर,
जयपुर-302020 (राजस्थान)
मोबाइल : 9828662214

पात्र

प्रधानाचार्य,
उपप्रधानाचार्य,
शिक्षकगण,
विकास तथा
उसके पिताजी

साक्षात्कार

डॉ. दयाराम मौर्य 'रत्न'

(विकास ने कक्षा 8 की परीक्षा गाँव से पास की है। आगे की पढ़ाई के लिये गाँव में विद्यालय न होने के कारण वह कक्षा 9 में प्रवेश के लिये नगर आता है। साथ में उसके पिताजी भी हैं)

विकास : (सहमते हुए) पिताजी, नगर में खूब पढ़ाई होती है। शिक्षक और प्रधानाचार्य बहुत सख्त होते होंगे। कल प्रवेश के लिए साक्षात्कार है। मुझे तो डर लग रहा है पिताजी!

पिताजी : डरने की क्या बात है, बेटा। तुम पहली बार नगर आए हो, इसलिये डर का अनुभव कर रहे हो।

विकास : पिताजी! ऐसा नहीं है। यहाँ के बच्चे भी पढ़ने में बहुत तेज होते होंगे।

पिताजी : बेटा, विकास! जो प्रश्न तुमसे पूछा जाए, बस धैर्य से उसका उत्तर देना। तनिक भी भयभीत नहीं होना है।

(आज प्रवेश के लिये विद्यालय में साक्षात्कार है। पिताजी के साथ विकास प्रधानाचार्य के कक्ष के सामने उपस्थित है। प्रवेश लेने वाले छात्र-छात्राओं की भारी भीड़ है। भीड़ देखकर विकास और भी घबराया है। एक-एक करके नाम पुकारे जाने पर विद्यार्थी प्रधानाचार्य कक्ष में प्रवेश करते हैं। इसी दौरान अनुचर ने विकास का नाम बुलाया।)

अनुचर : विकास! अपना कक्षा 8 का अंकपत्र लेकर कक्ष में प्रवेश करें।

विकास : (प्रधानाचार्य कक्ष में प्रवेश करते हुए) श्रीमान जी! क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?

प्रधानाचार्य : (बैठने का संकेत करते हुए) हाँ। अन्दर आ जाइए।

विकास : (कुर्सी पर बैठते हुए) आप सभी को प्रणाम।

(सभी ने विकास का अभिवादन स्वीकार किया। प्रधानाचार्य ने एक शिक्षक की ओर प्रश्न पूछने का संकेत किया)।

शिक्षक : विकास! आप किस वर्ग में प्रवेश लेना चाहते हैं?

विकास : श्रीमान जी! विज्ञान वर्ग में।

शिक्षक : विज्ञान वर्ग में आप क्यों प्रवेश लेना चाहते हैं?

विकास : विज्ञान विषय पढ़कर मैं वैज्ञानिक बनना चाहता हूँ। वैज्ञानिक ही नई-नई खोज करके विश्व में सुख-समृद्धि लाता है।

अन्य शिक्षक : भाप का इंजन किसने बनाया?

विकास : श्रीमान जी, जेम्सवाट ने।

गणित शिक्षक : उनहत्तर में दहाई इकाई बताइए।

विकास : सात दहाई नौ इकाई।

गणित शिक्षक : आपका उत्तर गलत है। उनहत्तर में छः दहाइयाँ और नौ इकाइयाँ होती हैं।

हिन्दी शिक्षक : संज्ञा की परिभाषा बताइये।

विकास : (भ्रमित होते हुए) जो शब्द संज्ञा के बदले प्रयुक्त होते हैं, उनको संज्ञा कहा जाता है।

हिन्दी शिक्षक : यह संज्ञा की नहीं, अपितु सर्वनाम की परिभाषा है।

विकास : (विकास के मन में घबराहट उत्पन्न हो गई) श्रीमान जी, क्षमा करें।

प्रधानाचार्य : आपकी तैयारी ठीक नहीं है, लगता है आप पढ़ाई पर ध्यान नहीं देते। कला वर्ग में आपको प्रवेश मिल सकता है।

(सभी से प्रणाम करते हुए विकास कक्ष से बाहर आया पिताजी व्यग्रता से प्रतीक्षा कर रहे थे)

पिताजी : साक्षात्कार कैसा रहा, बेटा!

विकास : पिताजी, मैं नर्वस हो गया था। कई प्रश्नों के उत्तर मैंने गलत दे दिए हैं। इसीलिए प्रधानाचार्य जी ने मेरे लिए कला वर्ग आवंटित किया है।

पिताजी : कोई बात नहीं बेटा! हर विषय में भविष्य बनाने की अपार संभावनाएँ होती हैं। शर्त ये है कि छात्र ध्यान से पढ़े।

विकास : पिताजी, मैं कला वर्ग के विषय पढ़ूँगा। आपका आशीष रहा तो निश्चित ही कुछ बनकर दिखाऊँगा।

पिताजी : मेरा आशीष है, बेटा।

(विकास ने कला वर्ग में प्रवेश लेकर कड़ी मेहनत से हाईस्कूल परीक्षा में जिले में टाप किया। उसका उत्साह और बढ़ गया। इण्टर, बी.ए. में भी वह प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ। आई.ए.एस. की परीक्षा में सफल होकर आज वह जिलाधिकारी है। सारा श्रेय वह अपने पिताजी को देता है।)

- सृजना कुटीर, अजीत नगर, प्रतापगढ़-230001 (उ.प्र.) मोबाइल : 9415928796

गणेश जी और उनका वाहन

सुधा शुक्ला

गणेश जी अपने गणपति बप्पा को, हम मूषक अर्थात् चूहे की सवारी करते देखते हैं तो हमें सचमुच बड़ा अचम्भा होता है। गणेश जी गोल मटोल और लम्बोदर हैं और मूषक एक छोटा-सा जीव।

हिन्दू धर्म में प्रत्येक देवी-देवताओं का कोई न कोई वाहन दर्शाया गया है। वाहन अपने अनुरूप चुना जाता है। आकार में तो गणेश जी और उनके वाहन मूषकराज में कोई समानता नहीं है। प्रकार में हो सकती है क्योंकि गणेश जी विघ्न बाधा हरने वाले बुद्धि और विद्या के देवता हैं। मूषक फुर्तीला और जागरूक होता है और तेजी से बंधनों को काट देता है। कदाचित मूषक के इन्हीं गुणों के कारण गणेश जी ने उसे अपना वाहन चुना होगा।

भगवान गणेश जी ने अपने वाहन रूप में मूषकराज को क्यों और कैसे चुना, इस सम्बन्ध में कई प्राचीन कथाएं प्रचलित हैं।

एक कथा के अनुसार गजमुखासुर नामक एक राक्षस था। उस राक्षस को यह वरदान प्राप्त था कि वह किसी अस्त्र-शस्त्र से नहीं मारा जा सकता। इसी बात का गजमुखासुर को अहंकार हो गया और वह देवताओं और ऋषियों को परेशान करने लगा। देवता और ऋषिगण एकत्रित होकर गणेश जी के पास पहुँचे। गणेश जी ने उन्हें गजमुखासुर से मुक्ति दिलाने का वर दिया। गजमुखासुर को वश में करने के लिए गणेश जी ने उससे युद्ध किया और उसे मारने के लिए अपने एक दांत को तोड़कर उस पर प्रहार किया। गजमुखासुर घबराकर मूषक बनकर भागने लगा। गणेश जी ने मूषक बने गजमुखासुर को अपने पाश में बांध लिया और उसके क्षमा मांगने पर उसे अपना वाहन बनाकर जीवनदान दे दिया।

दूसरी कथा के अनुसार क्रोंच नामक एक गन्धर्व था। देवराज इन्द्र की सभा में गलती से उसका पैर मुनि वामदेव के पैर पर पड़ गया। मुनि वामदेव को लगा कि क्रोंच ने जान-बूझकर ऐसा किया, इसलिए उन्हें क्रोध आ गया। उन्होंने क्रोंच को शाप दे दिया।

'गन्धर्व! तू मूषक हो जाएगा।'

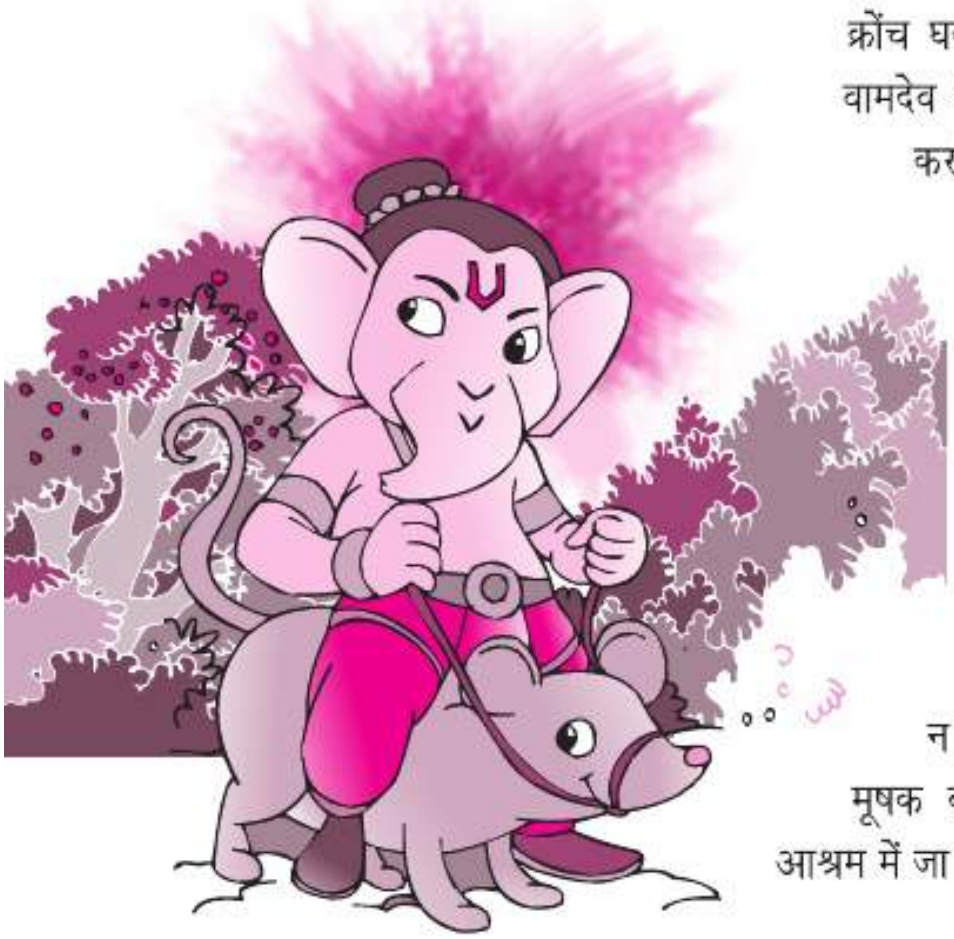

क्रोंच घबरा गया। हाथ जोड़कर वह मुनि वामदेव से इस शाप से उद्धार की प्रार्थना करने लगा। मुनि का क्रोध शान्त हो गया और उन्हें क्रोंच पर दया आ गई। मुनि वामदेव अपने दिए शाप को वापस नहीं ले सकते थे जैसे तीर कमान में वापस नहीं लौटता। इसलिए उन्होंने क्रोंच से कहा, 'तुम गणेश जी के वाहन बन जाओगे।'

क्रोंच की खुशी का ठिकाना न था। कुछ ही देर में वह गन्धर्व से मूषक बन गया और ऋषि पाराशर के आश्रम में जा गिरा और वहीं रहने लगा।

वह कोई छोटा-मोटा मूषक नहीं था। वह तो पर्वत जैसे आकार का अत्यन्त विशालकाय, बलशाली व भयानक मूषक था। उसके बड़े-बड़े दाँत तीखे और डरावने थे। उसने ऋषि पाराशर के आश्रम में भयंकर उत्पात मचा दिया। आश्रम में जो भी अन्न रखा था, वह सब चट कर गया। ऋषियों के वस्त्र और ग्रन्थों को कुतर दिया। मिट्टी के सारे पात्र तोड़ डाले। वाटिका के अनेक पेड़-पौधे उखाड़ डाले और वाटिका को उजाड़ डाला।

मूषक के उपद्रव से परेशान ऋषि पाराशर सोचने लगे, 'इस विपत्ति से त्राण पाने के लिए मैं क्या करूँ? कौन मेरा दुःख दूर करेगा? इस मूषक से कैसे छुटकारा मिलेगा?'

ऋषि पाराशर ने अपनी व्यथा गणेश जी से बतलाई। गणेशजी ने कहा, 'ऋषिवर! आप परेशान न हों। मैं इस मूषक को अपना वाहन बना लेता हूँ।'

मूषक को कष्ट से मुक्त करने के लिए गणेश जी ने उस मूषक पर अपना पाश फेंका। उस तेजस्वी पाश ने मूषक को बांध लिया और खींचकर गणेश जी के सम्मुख प्रस्तुत किया। पाश में बंधे मूषक ने जब श्री गणेश का दर्शन किया तो उसे ज्ञानोदय हुआ। भयभीत मूषक श्रीगणेश की स्तुति करने लगा -

'आप सम्पूर्ण जगत के स्वामी, जगत के कर्ता, धर्ता और पालक हैं। दयामय देव! आप मुझ पर दया करें।'

मूषक की स्तुति सुनकर श्री गणेश प्रसन्न हो गए और बोले, 'अब तू मेरी शरण में आ गया है तो निर्भय हो और कोई वर मांग ले।'

अहंकारी मूषक ने कहा, 'मुझे आपसे कुछ नहीं माँगना। आप चाहें तो मुझसे कुछ मांग लीजिए।'

गणेश जी मुस्कुराए और चतुराई से काम लेते हुए बोले, 'तू मेरा वाहन बन जा।' इस पर मूषक ने कहा, 'तथास्तु।'

इस प्रकार मूषक गणेश जी का वाहन बन गया। जैसे ही गणेश जी मूषक पर सवार हुए, वह उनके भार से दब गया और 'त्राहि माम त्राहि माम' कहने लगा।

'प्रभु! मैं आपके भार से दबा जा रहा हूँ। कृपा करके आप इतने हल्के हो जाएं कि मैं आपका भार वहन कर सकूँ।'

अपने वाहन की विनती सुनकर गणेश जी ने अपना भार कम कर लिया और उस दिन से आज तक मूषकराज ही गणेश जी का वाहन है।

- 3/417, विशाल खण्ड-3, गोमती नगर, लखनऊ-226010 मोबाइल : 9454414006

कठपुतली की कहानी

मोहन लाल मगो

कठपुतली अर्थात् लकड़ी पर उकेरी गई मानवीय काष्ठमूर्ति, जो प्राणवान की तरह नाचती, कूदती व फुदकती है, तरह-तरह के कौतूहल भरे करतब दिखलाती है तथा विस्मय उत्पन्न करती है।

पुतली स्वयं में कोई पात्र नहीं है परन्तु जिस पात्र के वेश में पुतली की मंच पर हलचल दिखाई देती है उसी पात्र के अनुरूप पर्दे पर पुतली किरदार के असली रूप का निर्वाह करती है। राजा-रानियों के चमक-दमक वाले चेहरे पारंपरिक वेशभूषा कठपुतली की पहचान कराती है।

काष्ठ की बनी मूर्तियाँ तो मात्र नकल हैं असल नहीं। अधिक से अधिक असल की ओर संकेत करने वाली यह पुतलियाँ नकल हैं। पुतलियां डेढ़ दो फुट लम्बी होती हैं।

राजा पुतली और रानी पुतली की प्रधानता को ओहदे के अनुरूप छोटे-बड़े किरदार अर्थात् चौकीदार, भिश्ती के अनुरूप लम्बाई चौड़ाई वाली पुतलियाँ व अलंकरण होते हैं।

पुतलियों को प्राणवान करने वाला सूत्रधार कहलाता है जो धागे के सहारे पुतलियों को ऊपर नीचे नचाता है तथा मुँह की सहायता से तीतर-बटेर, मुर्गे घोड़े आदि पशु-पक्षियों की ध्वनियाँ करता है। उसकी पत्नी ढोलकी पर मारवाड़ी संगीत की सुगन्ध बिखेरती है।

इनके द्वारा यजमानों के यहाँ विरुदावली और लोक संगीत प्रस्तुत किया जाता किन्तु आम जनता में अमर सिंह राठौर का खेल, राजा भोज, गोगाजी महाराज, विक्रमादित्य राजा कर्ण, जालिम सिंह डाकू आदि की कथाओं का प्रचलन है।

भारत में अलग-अलग अंचलों के राजाओं, रीति-रिवाज के अनुसार पोषाकों में उस अंचल की छाप अवश्य रहती है।

पुतलियों में चेहरे-मोहरे नाक नक्श एक सार ही होते हैं। पुतलियों की बड़ी-बड़ी आँखें होती हैं, नुकीली नाक किसी के पिचके तथा किसी के फूले गाल,

घुमावदार ठोड़ी, राजा-रानियों के शृंगासित चेहरे और तदनुसार पुतलियां राजसी परिधान और रत्न जड़ित आभूषण पहने हुए होती हैं।

पुतलियाँ त्वरित सवाल-जवाब करने वाली लोकभाषा की प्रतीक होती हैं। पुतलियों को नचाने वाले तीक्ष्ण बुद्धि के हाजिर जवाब, हँसोड़े और सभी के मन को लुभाने वाले होते हैं।

गुसाइयों तथा कालवेलियों आदि सभी प्रकार के महन्त-पुजारियों के गले में अपनी-अपनी मान्यता के अनुसार अब भी प्रतीक चिह्न पहने जाते हैं। राजस्थान और गुजरात में प्रत्येक महिला के गले में रामनामी पहनने की प्रथा है। अधिकांशतः हर किसी के गले में ताबीज देखा जा सकता है। अपने काम-काज और गृहस्थी में सहजता, सरलता और प्रसन्नता लाने के लिये परिवार और परिजन इन देवत्व का अवलम्बन लेते हैं। ये ही कृतियाँ और अनुकृतियाँ प्रतीकों के रूप में पूजी जाती हैं। उनका शृंगार और अलंकरण होता है उन्हें ऋतु फल और भोज अर्पण किये जाते हैं। विशिष्ट स्वर्गीय लोगों की समाधियाँ और यादगारी चबूतरे बनाये जाते हैं। ऐसे ही प्रतीकों को दृष्टिगत रखते हुए पुतलियों के आगाज का मार्ग ढूँढ़ा गया है तो कोई आश्चर्य नहीं। पुतलियों का प्रयोग अनन्त काल से चला आ रहा है।

पुतलियों के साथ-साथ प्राचीन काल में परमात्मा को रिझाने के लिए मुखौटों का प्रयोग हुआ जो आगे चलकर नाटक का स्वरूप बने।

आदिम अवस्था के प्रतीकों का सहारा लिये पाषाण, मिट्टी और काष्ठ के पुतले पारिवारिक और जातीय देवत्व के रूप में प्रतिष्ठित होते रहे हैं। इन प्रतिष्ठित मूर्तियों के माध्यम से मनुष्य ने अपनी मनोकामना पूरी होती रहने की कामना की और अपने स्थायित्व तथा सुरक्षा के लिए प्रतीकों का सहारा लिया।

कुत्सित आत्माओं के शमन के लिए पुतलों का सहारा लिया जाता रहा है। कुत्सित आत्माओं के लिए बलि और शुभ आत्माओं के लिए धातु निर्मित मालाएँ प्रतीक गले में कंठहार के रूप में सुशोभित रहता है।

पत्थरों और लकड़ियों पर उत्कीर्ण के प्रतीक पूजे गये और अन्ततः पुतलियों के आकार बने।

महाभारत, रामायण, पंचतंत्र, कथासरित में पुतली कला के उल्लेख मिलते हैं।

कहा गया है जैसे एक कठपुतली अपने संचालन करने वाले की इच्छा से चलती है वैसे ही इन्सान भगवान के इशारों पर चलता है।

- पी-65, पाण्डव नगर, मयूर विहार-1, दिल्ली-110093

घमण्डी हाथी

अखिलेश कुमार

एक जंगल में एक हाथी रहता है। वह बहुत घमण्डी था। उसे अपनी ताकत पर बहुत घमण्ड था। वह जंगल में इधर-उधर घूमता रहता था और पेड़-पौधों को तोड़ता-उखाड़ता था और छोटे जीव-जन्तु को परेशान करता था। एक दिन वह टहलते-टहलते जा रहा था और उसकी मुलाकात एक बन्दर से हुई और बन्दर ने उसे बहुत समझाया कि जंगल को क्यों उजाड़ते हो और छोटे जंगली जानवरों को क्यों परेशान करते हो परन्तु हाथी ने बन्दर की बात नहीं मानी और वह घूमता हुआ तालाब के किनारे पहुँचा और वह जैसे ही पानी-पीने के लिए तालाब में घुसा कि मगरमच्छ ने उसकी टाँग पकड़कर गहरे पानी में खींचने लगा और हाथी बचने के लिए खूब ताकत लगाई फिर भी कुछ नहीं हुआ। तब वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा और जंगल के सभी जानवर आ गये और हाथी को परेशान देखकर मगरमच्छ से विनती करने लगे जिससे मगरमच्छ को दया आ गयी उसने हाथी को

छोड़ दिया और हाथी ने जानवरों से क्षमा याचना की जिससे हाथी का घमण्ड चूर-चूर हो गया अब वह सभी जानवरों के साथ हिल-मिलकर रहने लगा।

- कक्षा-8, पुत्र श्री रमेश कुमार, पूर्व माध्यमिक विद्यालय,
अड़गोड़वा, मिहींपुरवा, बहराइच-271855
मोबाइल : 8601104093

विविध

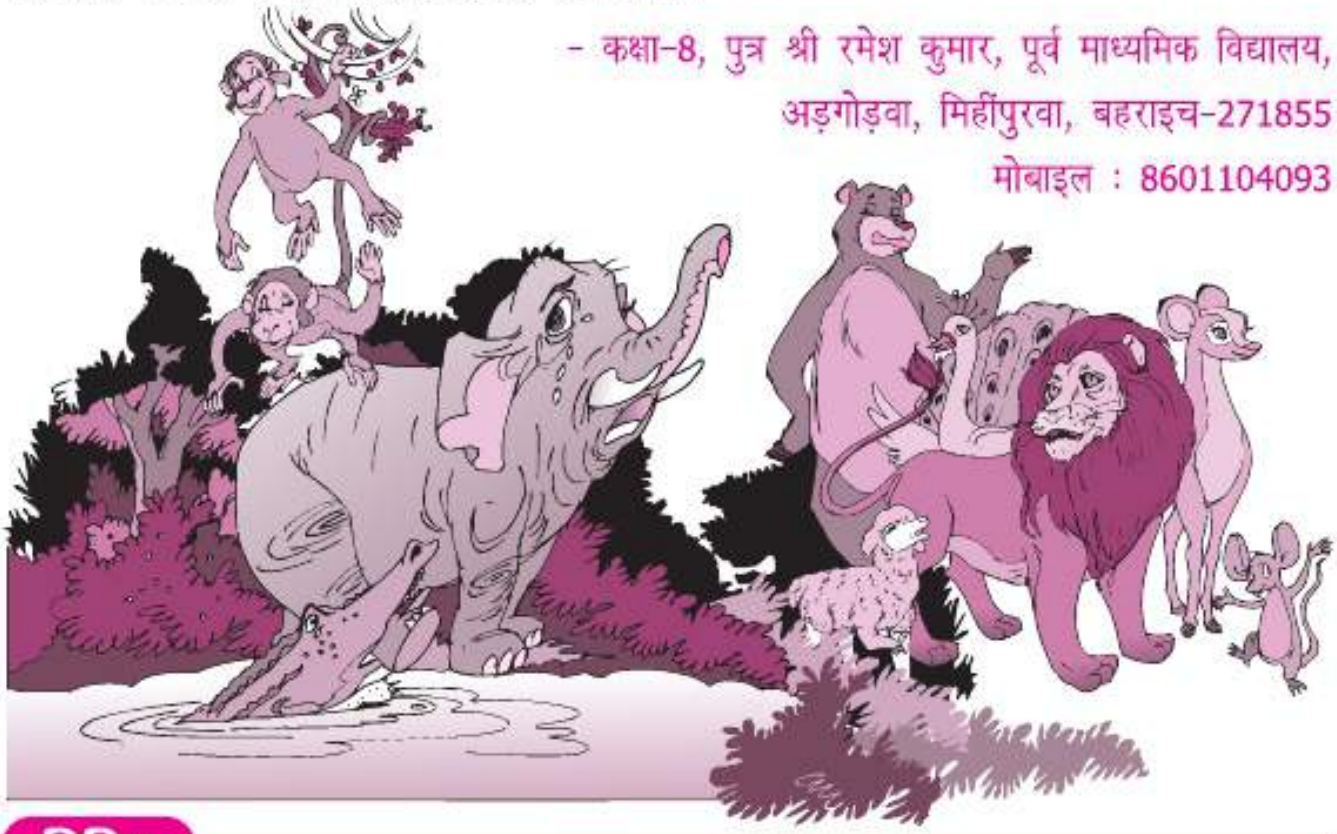

अन्तर ढूँढ़ो

उत्तर : (1) छाते में पैच नहीं (2) कैप में लोगो नहीं (3) हैंडल का डिजाइन चेंज (4) छाते का टीप गायब (5) कुत्ते की पूँछ गायब (6) कैप काली (7) टॉम ऊपर देख रहा है (8) कुत्ते का कान गायब (9) आगे वाले कुत्ते की एक उँगली ज्यादा (10) पीछे वाले कुत्ते की बेल्ट

छप्पक छप्पक छैया

सृष्टि पाण्डेय

छप्पक-छप्पक छैया
मुन्ना बोला - 'मैया'!
बारिस की बूँदों में खेलूँ,
ता-ता-ता-ता थैया।
छप्पक-छप्पक छैया!
मुन्नी बोली मैया,
भीग रही है गइया,
उसको भीतर लाओ,
सर्दी से उसे बचाओ।
सुनो न मेरी मैया।
छप्पक-छप्पक छैया!

छुटकी की हैरानी,
भरा गली में पानी।
देखो, देखो नानी,
बनने लगी तलैया।
छप्पक छप्पक छैया।
छुटकी यों चिल्लाई -
जल्दी दौड़ो भाई।
अरे! बचाओ मेरी
डूब न जाए नवैया!
वैसे उसे बचा लेती मैं
पर मेरी छोटी छोटी पैया!
छप्पक-छप्पक छैया।

- 237, सुभाष नगर, शाहजहांपुर-242001 (उ.प्र.)
मोबाइल : 9451808016

अजय राजपूत

काला बादल आया रे

काला बादल आया रे
घुमड़-घुमड़ के आया रे
रिम-झिम वरसा संग में लाया
खेतों में हरियाली छायी
किसानों का मान बढ़ायी
काला बादल आया रे
बगिया में हैं फूल खिले
भँवरे लेते खूब मजे
फूलों का रस चूस-चूसकर
मधुमक्खी ले जाती है
अपने छत्ते को वह रस से
पूरा भर वह लेती है
फिर भी वो आराम न करती
छत्ता नया बनाती है।

भारत देश महान

सबसे प्यारा जग से न्यारा
भारत देश महान
अजब है इसकी शान
भारत देश महान
जब दुश्मन से छिड़ी लड़ाई
सबने मिलकर लड़ी लड़ाई
दुश्मनों को मार भगाया
देश को अपने आजाद कराया
भारत देश बना महान
छब्बीस जनवरी को लागू हुआ संविधान।
भारत देश महान है
महापुरुषों का दिया दान है
भारत देश महान है
देश के हर कोने-कोने में
सच्चाई ही सच्चाई है
भारत देश महान है
महापुरुषों का दिया दान है
न डरेंगें न डरायेंगें
हाथ किसी के न आएगें
भारत देश महान है
महापुरुषों का दिया दान है
भगत सिंह, सुभाष जैसे
लोग हुए कुर्बान है
भारत देश महान है
महापुरुषों का दिया दान है।

पुत्र : श्री विनय कुमार, कक्षा-8, पूर्व माध्यमिक विद्यालय, ग्राम : अड़गोड़वा, पोस्ट : शाहपुर कला-271855 मिहींपुरवा, बहराइच मोबाइल : 7800163183